

## वैश्विक बैंकिंग गतिविधियां

वैश्विक सुधारों ने पूरे विश्व में बैंकिंग प्रणालियों की समुत्थानशक्ति को बढ़ाया है फिर भी बैंक की लाभप्रदता और आस्तियों की गुणवत्ता को लेकर चिंताएं बनी हुई हैं। कुछ अधिकार क्षेत्रों में बैंक के तुलन-पत्र को स्वच्छ बनाने का कार्य अभी भी जारी है जबकि अन्य में बैंक, संवृद्धि को सहारा देने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। विश्व के 100 सबसे बड़े बैंकों का कार्यनिष्पादन पिछले वर्ष की अपेक्षा 2016 में काफी हद तक एक समान था। वैश्विक विनियामकीय सुधार कार्यक्रमों में यद्यपि काफी प्रगति हुई है लेकिन वे अभी भी पूर्णता से दूर हैं।

### I. परिचय

II.1 वैश्विक वित्तीय संकट (जीएफसी), यूरोपियन सरकारी कर्ज संकट (ईएसडीसी) के कारण तथा वर्ष 2016 तक उसके बने रहने और बैंकिंग प्रणाली में लगातार बने रहे नाजुक दौर ने राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तरों पर गंभीरता-पूर्वक ध्यान आकर्षित किया है क्योंकि वैश्विक संवृद्धि में गिरावट के लिए यह एक मुख्य जोखिम बना हुआ है। बैंकों द्वारा दिए जाने वाले उधार में अत्यधिक कमी आना, इन संस्थाओं द्वारा डिलीवरेज का रास्ता अपनाना और बफर मजबूत करते रहना, वे प्रमुख कारक हैं जिनकी वजह से संकट-पूर्व मौजूद शीर्ष वैश्विक पूंजी-प्रवाह लुढ़कता गया है। वर्ष 2016 में बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेन्ट (बीआईएस) के रिपोर्टिंग बैंकों के सीमा-पार दावों में वर्ष 2015 के 42.3 प्रतिशत की तुलना में गिरावट पाई गई जो घटकर जीडीपी का 41.5 प्रतिशत हो गई। विश्व में क्रेडिट की स्थिति 2017 के प्रारंभ में सहज थी और अंतरराष्ट्रीय बैंक क्रेडिट वर्ष 2016 के आखिर में तथा वर्ष 2017 के प्रारंभ में बढ़ रहा था किंतु 2017 की दूसरी तिमाही में वह ऋणात्मक हो गया। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बैंक दावों में हुई वृद्धि का प्रमुख संचालक गैर-बैंक संस्थाओं को दिया गया क्रेडिट था। वर्तमान में विश्व की बैंकिंग प्रणाली सुधार के दौर से गुजर रही है और स्वयं को विश्व के नए नियमों के अनुसार ढालने में लगी हुई है। हालांकि बैंकों को सुरक्षित, सुदृढ़ एवं समुत्थानपूर्ण बनाने के प्रयासों में काफी प्रगति हुई है लेकिन विश्वव्यापी सुधार का कार्यक्रम अभी भी पूरा नहीं हुआ है।

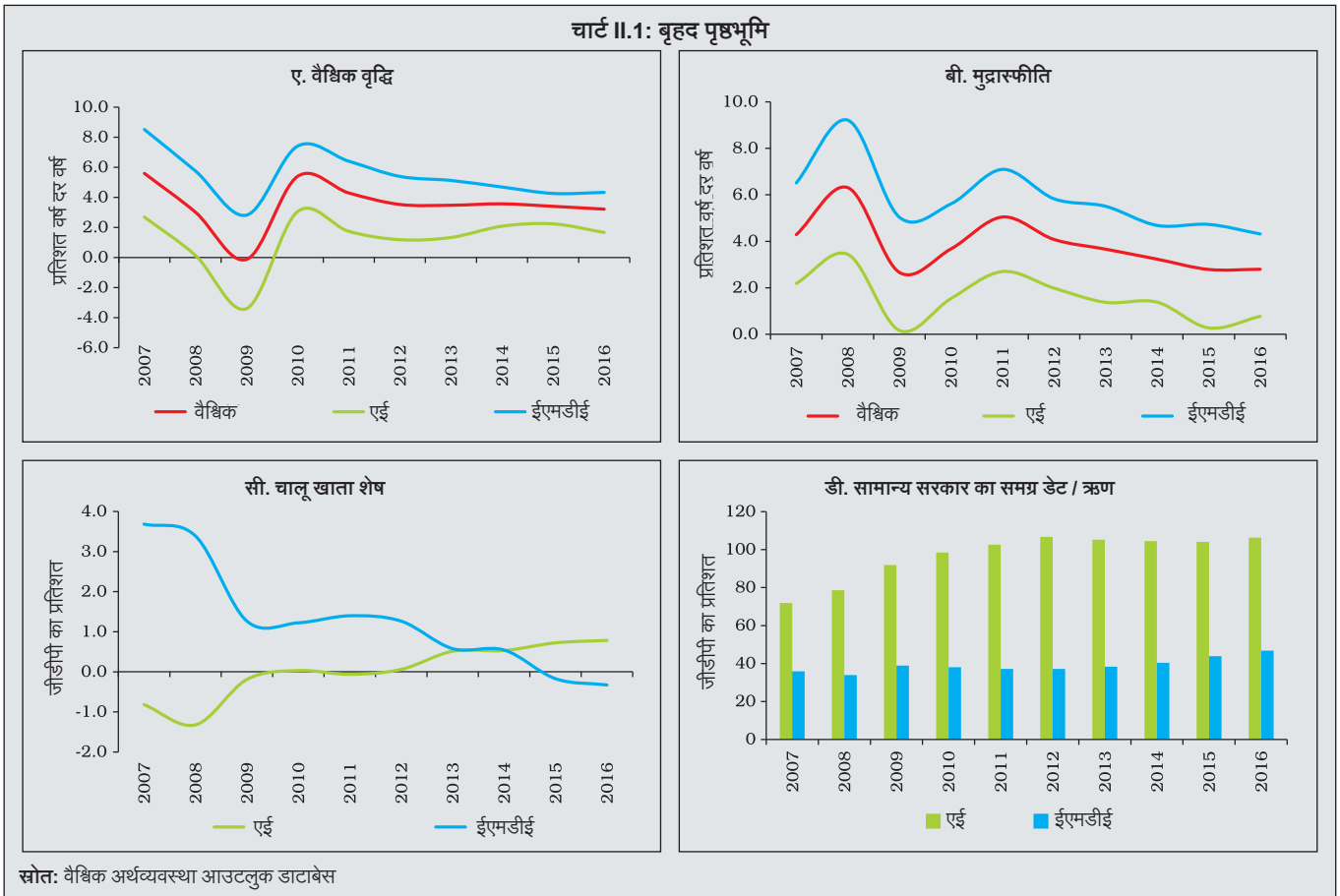
II.2 इस परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए, इस अध्याय के भाग II में समष्टि आर्थिक हालात प्रस्तुत किए गए हैं, जिनके मद्देनजर विश्व की बैंकिंग प्रणाली के बारे में प्रमुख वित्तीय सुदृढ़ता संकेतकों के आधार पर उसके निष्पादन का विश्लेषण किया गया है। कतिपय उन्नत अर्थव्यवस्थाओं(ईई) और उदीयमान बाजारों की अर्थव्यवस्थाओं(ईएमई) में बैंकिंग प्रणालियों में हुई गतिविधियों की जानकारी भाग-III में दी गई है। विश्व के 100

सबसे बड़े बैंकों के कार्यनिष्पादन का परीक्षण भाग-IV में प्रस्तुत किया गया है। भाग-V में विश्व में सुधार कार्यक्रमों में हुई प्रगति की समीक्षा की गई है। भाग-VI में समापन टिप्पणियां दी गई हैं तथा दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है।

### II. बृहद-वित्तीय परिदृश्य

II.3 वर्ष 2016 की पहली छमाही में वैश्विक संवृद्धि ने धीमेपन का त्याग कर दिया और दूसरी छमाही में उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की अगुआई में क्रमिक रूप से गति पकड़ी। वर्ष 2017 की पहली तीन तिमाहियों में इसमें कर्षण पैदा हुआ जिससे पण्य निर्यात करने वाले बड़े उदीयमान बाजारों की अर्थव्यवस्थाओं के ज़ख्म बड़े पैमाने पर भरने लगे और जिसने उन्हें मंदी की चपेट से बाहर निकाल लिया। यहां तक कि उन्नत अर्थव्यवस्थाएं एवं उदीयमान बाजारों की अर्थव्यवस्थाएं संवृद्धि के प्रोफाइल को लेकर परस्पर पुनः जुड़ती रही हैं, फिर भी मुद्रास्फीति की हालत उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में लक्ष्य से नीचे बनी रही है; वहीं उदीयमान बाजारों की अर्थव्यवस्थाओं में इसकी स्थिति धीमी रही और साथ ही बेरोजगारी भी बनी रही। वैश्विक गतिविधि में वृद्धि के अनुरूप ही वैश्विक व्यापार ने भी गति पकड़ ली है। इसका असर उन उदीयमान बाजारों की अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ रहा है जो विश्व व्यापार के इंजन को विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ जोड़कर उनका उपयोग करना चाहती हैं और अपनी संवृद्धि की महत्वाकांक्षाओं को हासिल करना चाहती हैं। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में सामान्य तौर पर सरकारी कर्ज का स्तर बढ़ता रहा है जो जीडीपी से अधिक है, जबकि उदीयमान बाजारों की अर्थव्यवस्थाओं में यह औसतन जीडीपी के आधे से भी कम है (चार्ट II.1)। राष्ट्रीय स्तर पर उल्लेखनीय असंतुलनों के बावजूद वैश्विक स्तर पर बाह्य असंतुलन कम हुए हैं। उम्मीद की जाती है कि भू-राजनीतिक परिस्थितियां उभरते परिदृश्य को आकार प्रदान करेंगी साथ ही मौद्रिक नीति के सामान्यीकरण से इस पर प्रभाव पड़ेगा तथा सर्वांगी केंद्रीय बैंकों द्वारा तुलन-पत्र के आकार को छोटा करने का भी असर रहेगा।

चार्ट II.1: बृहद पृष्ठभूमि



II.4 बैंक ऋण, जो वास्तविक गतिविधियों<sup>1</sup> का मुख्य अग्रणी संकेतक होता है, यदि वास्तविक और वित्तीय चक्रों के बीच होने वाले उतार-चढ़ाव को ध्यान में रखकर देखा जाए तो विभिन्न अधिकार-क्षेत्रों में इसकी स्थिति भिन्न-भिन्न रही है। यूरो क्षेत्र में, गिरती हुई या न्यून क्रेडिट संवृद्धि शैथिल्य प्रदर्शित कर रही है। यहां तक कि जिन घटक देशों ने तेजी से तुलन-पत्र को स्वच्छ बनाया था, वे भी कुछ समय के लिए क्रेडिट में तेजी के बाद कुछ धीमापने का अनुभव कर रहे हैं (चार्ट II.2)। उदीयमान बाजारों की अर्थव्यवस्थाओं में देश विशेष के मुद्दों ने उनके ऋण की वृद्धि को संयमित किया है। जबकि आस्ति-गुणवत्ता के सरोकारों ने रूस और भारत में ऋण वृद्धि को बाधित किया है, ब्राजील में कम संवृद्धि दर तथा कारपोरेट की घटती मांग ने समग्र क्रेडिट वृद्धि को ऋणात्मकता की ओर धकेल दिया है। इसके विपरीत, अपने समकक्षों की तुलना में चीन में तीव्र क्रेडिट वृद्धि का अनुभव

किया जा रहा है, जबकि हाल के कुछ समय में उसकी आर्थिक गतिविधियां अपेक्षाकृत मंद हो गई थीं।

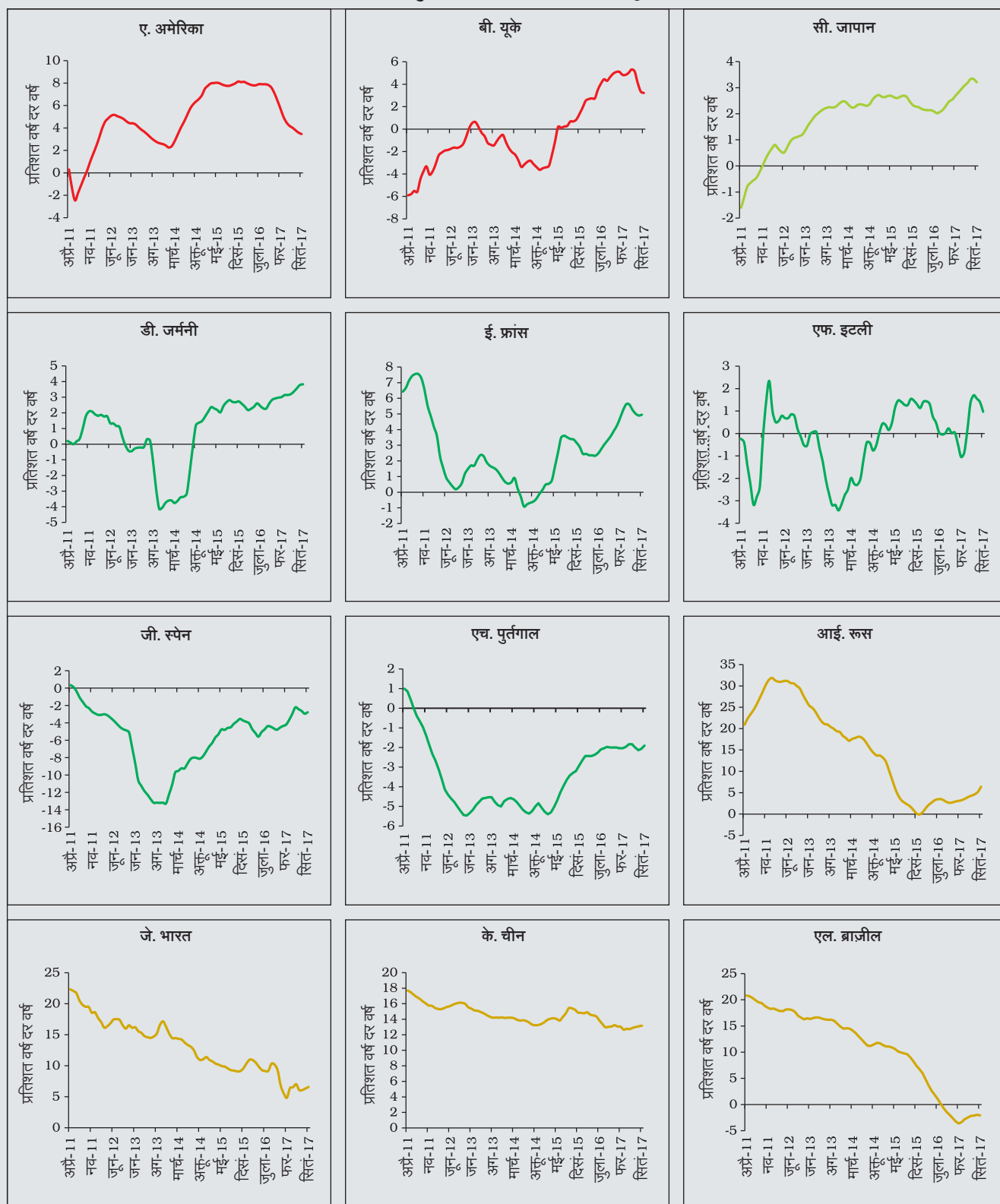
II.5 ऋण वृद्धि की इस परिस्थिति ने हाउसहोल्ड की कर्ज स्थिति को प्रभावित किया है, जो कुछेक उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में तथा उदीयमान बाजारों की अर्थव्यवस्थाओं में बढ़ता जा रहा है जबकि अन्य में इसमें हास हुआ है, जबकि चीन, यूके, अमेरिका, भारत और रूस में 2015 की तुलना में 2016 में बढ़ोतरी का अनुभव किया गया है (चार्ट II.3)।

### वित्तीय सुदृढ़ता के प्रमुख संकेतक

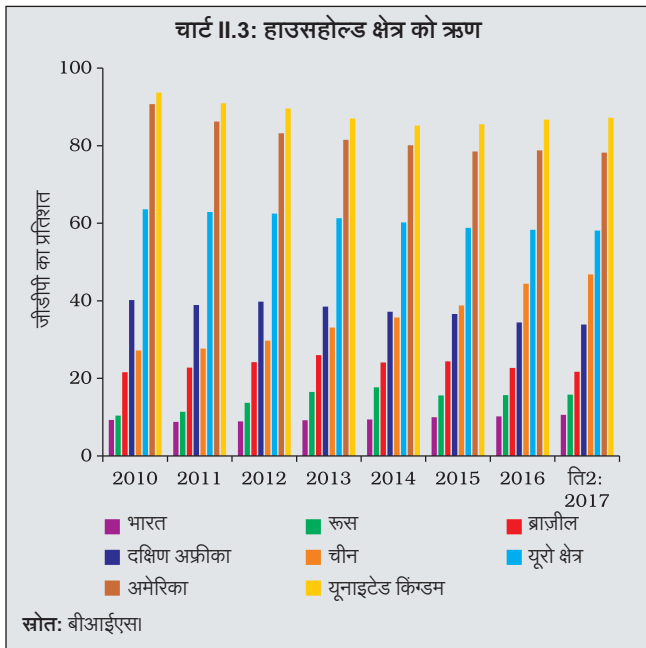
II.6 बैंकिंग प्रणाली अभी भी कुछ हिस्सों में सुधार के दौर से गुजर रही है, जबकि अन्य क्षेत्रों में बैंक संवृद्धि को संबल प्रदान करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं साथ ही वे अपनी पूंजी बढ़ाना चाहते हैं तथा लाभ की स्थिति में रहना चाहते हैं। ऐसे प्रमुख

<sup>1</sup> एम ग्रेशिया- एसक्रीबेनो और फि हान (2015), 'क्रेडिट एक्सपेंशन इन इमर्जिंग मार्केट: प्रोपेलर ऑफ ग्रोथ?' आइएमएफ वर्किंग पेपर, डब्ल्यूपी/15/212, सितंबर देखें

चार्ट II.2: चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं में क्रेडिट वृद्धि



नोट: यह आंकड़ा तीन माह का चल औसत है  
 स्रोत: डाटास्ट्रीम, सीईआईसी और केंद्रीय बैंकों की वेबसाइटें



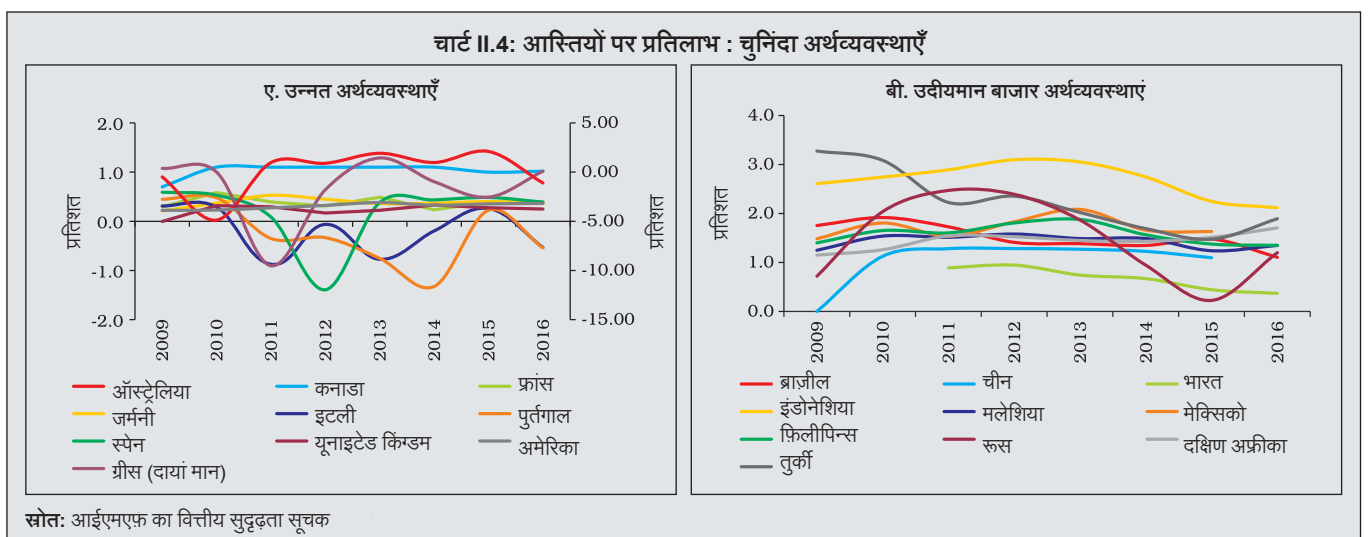
संकेतकों का एक सेट जो लाभप्रदता, आस्ति-गुणवत्ता तथा पूंजी पर्याप्तता की माप करता है, उससे पता चलता है कि बीते समय में कितनी प्रगति हुई है तथा वह बैंकिंग प्रणालियों के मौजूदा स्थिति का सार भी प्रस्तुत करता है।

#### आस्तियों पर प्रतिफल

11.7 जहां बैंकिंग गतिविधियों को विपरीत परिस्थितियों का सामना कर पड़ रहा है, वहीं बैंकों की आस्तियों पर प्रतिफल(आरओए)<sup>2</sup> धीमा बना रहा, जो तुलना पत्र के सुधार में

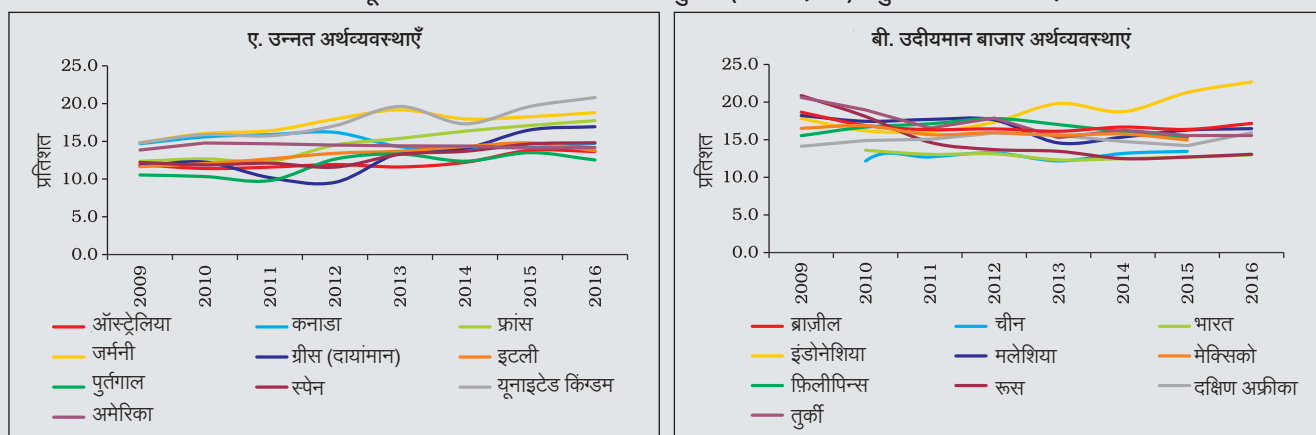
तेजी लाने, आस्तियों में दबाव से सुरक्षित करने हेतु बफर बढ़ाने और बासेल III मानकों की अपेक्षाओं को पूरा करने की उनकी क्षमताओं को प्रभावित कर रहा है। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के सभी बैंकों में आस्तियों पर प्रतिफल में वर्ष 2009 से सुधार देखा जा रहा है, किन्तु वर्ष 2016 के दौरान उनमें गिरावट आ गई, जो राष्ट्र-स्तर के डॉयनेमिक्स को दर्शाता है। आश्चर्यजनक बात यह है कि ग्रीस के बैंकों ने दो वर्ष तक खतरे के निशान में रहने के बावजूद आस्तियों पर धनात्मक प्रतिफल दर्ज किया है, जिसका कारण काफी हद तक ऋण में होने वाली हानियों के लिए किए जाने वाले प्रावधानों में कमी, निवल ब्याज आय तथा ब्याज से इतर आय में वृद्धि होना रहा है। इटली और पुर्तगाल में बैंकों की आस्तियों पर प्रतिफल 2016 में ऋणात्मक हो गया था क्योंकि राजस्व में कमी दर्ज की गई तथा निष्क्रिय आस्तियां बढ़ गईं। यूके और अमरीका में आस्तियों पर प्रतिफल स्थिर परन्तु धीमा बना रहा जिसका मुख्य कारण परिचालनगत आय की मंद वृद्धि थी (चार्ट II.4)।

11.8 उदीयमान बाजारों की अर्थव्यवस्थाओं में ऋण चूकों के उच्च स्तर, ऋण की उच्च लागत और मांग में सामान्य कमी का मिलाजुला असर बैंक आस्तियों के प्रतिफल पर दिखाई पड़ा। इन कारणों ने ब्राजील, चीन, भारत तथा मैक्सिको के बैंकों की लाभप्रदता को प्रभावित किया है। रूस, दक्षिण अफ्रीका और तुर्की तथा इंडोनेशिया ने पिछले वर्ष की तुलना में वर्ष 2016 में अपना निष्पादन बेहतर बनाया जबकि रूस के बैंकों में तेजी से परिवर्तन देखा गया। इंडोनेशिया के बैंक सबसे अधिक लाभ कमाने वाले बैंक थे क्योंकि उनका निवल ब्याज मार्जिन अपेक्षाकृत अधिक था।



<sup>2</sup> औसत कुल आस्तियों पर निवल आय का अनुपात

चार्ट II.5: पूंजी और जोखिम-भारित आस्ति अनुपात (सीआरएआर) : चुनिंदा अर्थव्यवस्थाएँ



स्रोत: आईएमएफ का वित्तीय सुदृढ़ता सूचक

### पूंजी पर्याप्तता

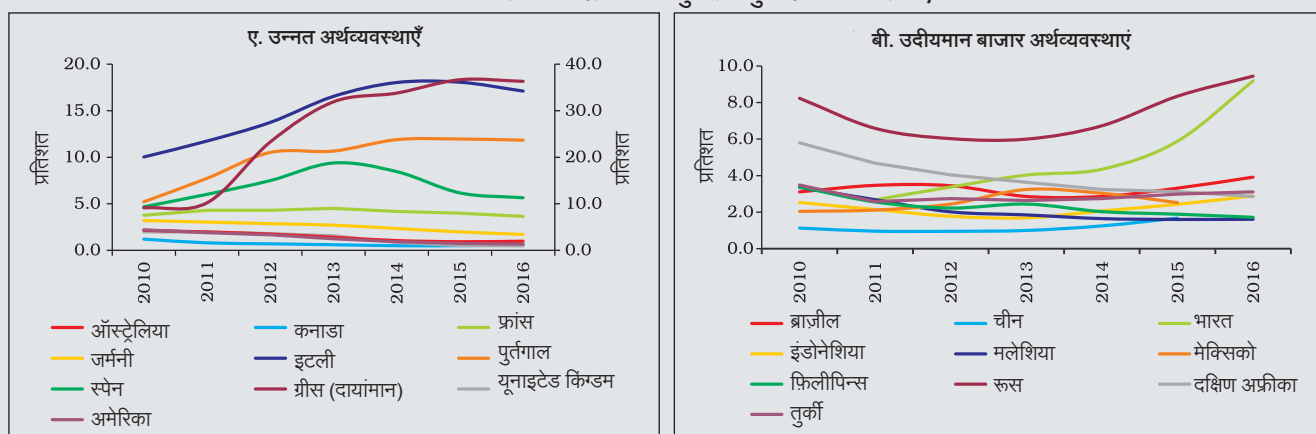
II.9 पूंजी पर्याप्तता को जोखिम भारित आस्तियों (सीआरएआर) की तुलना में विनियामकीय पूंजी के अनुपात द्वारा व्यक्त किया जाता है जिसमें उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में सामान्यतः वर्ष 2016 में सभी बैंकों में सुधार देखा गया हालांकि कुछ देश विशेष के मुद्दों की वजह से इटली एवं पुर्तगाल में बैंक-पूंजी में गिरावट आ गई थी। इसी प्रकार, उदीयमान बाजारों की अर्थव्यवस्थाओं के बैंकों में सीआरएआर की स्थिति बेहतर हुई है और वे पूंजी को निरंतर न्यूनतम विनियामकीय आवश्यकता से ऊपर बनाए हुए हैं (चार्ट II.5)। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में यूके के बैंकों ने पूंजी का सर्वाधिक अनुपात बनाए रखा है। उदीयमान

बाजारों की अर्थव्यवस्थाओं में इंडोनेशिया के बैंक सबसे अधिक पूंजीकृत बैंक बने रहे हैं। भारतीय बैंकों में पूंजी की स्थिति वर्ष 2016 की तुलना में बेहतर हुई है।

### आस्ति गुणवत्ता

II.10. अनर्जक ऋण (एनपीएल) अनुपात<sup>3</sup>, जो आस्ति गुणवत्ता का एक पैमाना है, संकट की स्थिति से गुजर रहे ग्रीस, इटली और पुर्तगाल को छोड़कर उन्नत अर्थव्यवस्थाओं वाले अधिकांश देशों में कम हुआ। जिन देशों की आस्ति गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार हुआ उनमें जर्मनी, यूके और अमेरिका शामिल हैं (चार्ट II.6)। अधिकांश उदीयमान बाजारों की

चार्ट II.6: गैर निष्पादित ऋण अनुपात : चुनिंदा अर्थव्यवस्थाएँ



स्रोत: आईएमएफ का वित्तीय सुदृढ़ता सूचक

<sup>3</sup> कुल ऋणों की तुलना में अनर्जक ऋणों का अनुपात

अर्थव्यवस्थाओं में 2010 की तुलना में एनपीएल अनुपात में सामान्यतः वृद्धि हुई। भारत में क्षेत्र विशिष्ट मुद्दों के कारण बैंकों की आस्ति गुणवत्ता प्रभावित हुई जबकि रूस और ब्राजील के बैंक सामान्य आर्थिक कमजोरी के चलते प्रभावित हुए। चीन में बढ़े

हुए कारपोरेट लीवरेज के दबाव ने आस्ति गुणवत्ता को प्रभावित किया। आस्ति गुणवत्ता संबंधी चिंताओं ने कई देशों में 'त्वरित सुधारात्मक कार्रवाई' के रूप में नीतिगत कार्रवाई करने के लिए प्रेरित किया (बॉक्स II.1)।

### बॉक्स II.1: विभिन्न देशों में त्वरित सुधारात्मक कार्रवाई

त्वरित सुधारात्मक कार्रवाई (पीसीए) का तात्पर्य उन संकटग्रस्त वित्तीय संस्थाओं पर उपयुक्त विनियामकीय प्रतिबंध लागू करना है, जिनमें दबाव के लक्षण दिखाई देने लगे। पीसीए फ्रेमवर्क का बुनियादी आधार उस सिद्धांत पर आधारित है जो यह कहता है कि 'बहुत देर हो जाने से पहले ही कार्रवाई कर लेनी चाहिए'। बैंक पर दबाव की तीव्रता के निर्धारण के लिए मानदंडों के एक सेट का उपयोग किया जाता है और तदनुसार प्रबंधन और कार्य-कलापों पर प्रतिबंध लगाए जाते हैं। पीसीए के केंद्र-बिंदु में ऐसे प्रतिबंध हैं जो समस्या के जटिल होने के साथ क्रमशः कठोर होते जाते हैं ताकि बैंकों को विलंब से सुधारात्मक कार्रवाई प्रारंभ करने हेतु कोई प्रोत्साहन न मिल सके। यह अंतिम ऋणदाता (एलओएलआर) संबंधी नैतिक जोखिम को भी कम करता है और बैंक पर समग्र वित्तीय स्थिति में सुधार करने हेतु दबाव डालता है।

#### विभिन्न देशों में पीसीए व्यवस्था

अमेरिका : अमेरिका में पर्यवेक्षी कार्रवाई के रूप में पीसीए की शुरुआत जमाराशि लेने वाली उन बीमाकृत संस्थाओं के लिए की गई थी, जो पर्याप्त रूप से पूंजीकृत नहीं थीं। बैंकों को तीन पूंजीगत अनुपातों (सामान्य इक्विटी टियर 1 (सीईटी 1); टियर 1 तथा कुल जोखिम आधारित पूंजी अनुपात) के आधार पर पांच जोन अर्थात् अच्छी तरह से पूंजीकृत; पर्याप्त रूप से पूंजीकृत; कम पूंजीकृत; उल्लेखनीय रूप से कम पूंजीकृत; गंभीर रूप से कम पूंजीकृत) में रखा गया था (आईएमएफ 2015)। अच्छी तरह से पूंजीकृत वाले जोन को छोड़कर प्रत्येक जोन में अनिवार्य तथा विवेकाधीन प्रावधानों का ऐसा सेट है जो बढ़ती हुई कठोरता के क्रम में है (सारणी 1)।

#### सारणी 1 विभिन्न अधिकार क्षेत्रों में पीसीए फ्रेमवर्क

	अमेरिका	यूके	कनाडा	भारत
चरणों की संख्या	5	5	4	3
चरणों के नाम	चरण 1: अच्छी तरह से पूंजीकृत चरण 2: पर्याप्त पूंजीकृत चरण 3: कम पूंजीकृत चरण 4: उल्लेखनीय रूप से कम पूंजीकृत चरण 5: गंभीर रूप से कम पूंजीकृत	चरण 1: व्यवहार्यता की तुलना में कम जोखिम चरण 2: व्यवहार्यता की तुलना में सामान्य जोखिम चरण 3: व्यवहार्यता की तुलना में जोखिम न होना फर्म द्वारा कार्रवाई चरण 4: फर्म की व्यवहार्यता की तुलना में आसन्न जोखिम चरण 5: फर्म समाधान प्रक्रिया में है अथवा सक्रिय रूप से उसे समाप्त किया जा रहा है	चरण 1: प्रारंभिक चेतावनी चरण 2: वित्तीय व्यवहार्यता अथवा सॉल्वेंसी की तुलना में जोखिम चरण 3: भविष्य की वित्तीय स्थिरता के संबंध में गंभीर संदेह चरण 4: आसन्न अव्यवहार्यता/ इनसॉल्वेंसी	प्रत्येक संकेतक के लिए तीन सीमाएं परिभाषित हैं।
प्रमुख मानदंड	पूंजी तथा लीवरेज	व्यवहार्यता की तुलना में जोखिम	वित्तीय व्यवहार्यता अथवा सॉल्वेंसी	पूंजी, आस्ति गुणवत्ता लाभप्रदता
प्रयुक्त संकेतक	कुल पूंजी, टियर 1 पूंजी, सीईटी 1 अनुपात, लीवरेज, अनुपूरक लीवरेज	पर्यवेक्षी मूल्यांकन फ्रेमवर्क के वे तत्व जिससे फर्म के जोखिम एवं उन्हें प्रबंध करने की उसकी क्षमता का पता चलता है, यथा- बाह्य संदर्भ, कारोबार जोखिम, प्रबंधन और अभिशासन, जोखिम प्रबंधन एवं नियंत्रण, पूंजी तथा चलनिधि।	संस्था की समग्र निवल जोखिम, पूंजी तथा अर्जन, जोखिम प्रबंधन अथवा नियंत्रण संबंधी कमियां जिससे वित्तीय व्यवहार्यता अथवा सॉल्वेंसी के प्रति गंभीर संकट उत्पन्न होने की संभावना हो	सीआरएआर / सीईटी 1 अनुपात, निवल एनपीए अनुपात तथा आस्तियों पर प्रतिलाभा फ्रेमवर्क के अतिरिक्त लीवरेज अनुपात पर भी निगाह रखी जाती है।
वर्गीकरण की पद्धति	प्रत्येक संकेतक के लिए सीमाएं परिभाषित हैं।	अग्रसक्रिय मध्यस्थता फ्रेमवर्क (पीआईएफ) स्कोर के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक विश्लेषण किया जाता है।	बैंकों के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक मूल्यांकन किया जाता है।	प्रत्येक संकेतक के लिए सीमाएं परिभाषित हैं।
नियम आधारित	पर्याप्त रूप से पूंजीकृत को छोड़कर प्रत्येक चरण के लिए क्रमिक कठोरता के साथ अनिवार्य तथा विवेकपूर्ण प्रावधानों का सेट मौजूद है।	यूके में पीआईएफ है जो बैंकों को उनके पीआईएफ चरण के अनुसार संभावित पर्यवेक्षी कार्रवाई के बारे में दिशानिर्देश देता है।	प्रत्येक चरण के लिए कार्रवाई संकेतक का सेट उपलब्ध है। प्राधिकारी मामला दर मामला आधार पर उनका उपयोग कर सकते हैं।	नियम आधारित ऐसी व्यवस्था है जिसके अंतर्गत प्रत्येक चरण के लिए निर्धारित अनिवार्य कार्रवाई तथा विवेकपूर्ण कार्रवाई के लिए सामान्य सूची उपलब्ध है।

(जारी....)

**यूके :** यूके में पीसीए फ्रेमवर्क को अतिसक्रिय हस्तक्षेप फ्रेमवर्क (पीआईएफ) के रूप में जाना जाता है। इसके पांच चरण हैं और प्रत्येक चरण विफलता से निकटता के विभिन्न चरणों को दर्शाता है और प्रत्येक फर्म की स्थिति किसी एक समय पर किसी एक निर्दिष्ट चरण पर होती है। किसी फर्म के संबंधित चरण की समीक्षा कम से कम वर्ष में एक बार की जाती है और आवश्यकतानुसार किसी घटना विशेष को ध्यान में रखते हुए अधिक आवर्ती में भी की जाती है (बीओई 2016)। जब कोई फर्म उच्चतर पीआईएफ चरण की ओर अग्रसर होती है अर्थात् जब विवेकपूर्ण विनियामकीय प्राधिकारी (पीआरए) यह निर्धारित करता है कि फर्म विशेष की व्यवहार्यता स्थिति में गिरावट आई है तो पर्यवेक्षी कार्रवाई अधिक कठोर हो जाती है। पीआरए द्वारा मात्रात्मक और गुणात्मक संकेतकों का उपयोग करके व्यवहार्यता जोखिम का मूल्यांकन किया जाता है।

**कनाडा :** कनाडा में पीसीएस फ्रेमवर्क एक लचीले हस्तक्षेप वाली व्यवस्था के अंतर्गत कार्य करता है, जिसमें प्रत्येक चरण के लिए कोई अनिवार्य कार्रवाई पूर्व निर्धारित नहीं है। जमाराशि लेने वाली फेडरल-विनियमित संस्थाओं के संबंध में हस्तक्षेप संबंधी दिशानिर्देश दर्शाता है कि किस स्तर पर किस प्रकार की कार्रवाई या हस्तक्षेप सामान्यतया किया जाएगा। सुपरिन्टेन्डेन्ट ऑफ फाइनेंशियल इंस्ट्रुमेंट्स ऑफिस (ओएसएफआई) तथा/ अथवा कनाडा डिपाजिट इन्श्योरेंस कॉर्पोरेशन (सीडीआईसी) को छूट है कि वह समस्या या संस्था विशेष के संबंध में प्रत्येक मामले के आधार पर आवश्यक कार्रवाई करे और इस प्रकार यह व्यवस्था इस फ्रेमवर्क को लचीला बनाती है।

**भारत :** उक्त फ्रेमवर्क की तुलना में भारत का पीसीए फ्रेमवर्क अधिक व्यापक और नियम आधारित है। यह पूंजीगत अनुपात के साथ-साथ आस्ति की गुणवत्ता एवं लाभप्रदता पर बल देता है। सिद्धांततः विवेकपूर्ण और अनिवार्य कार्रवाई के संबंध में उपलब्ध जानकारी के चलते बैंकों को पता होता है कि जोखिम संबंधी सीमा का उल्लंघन होने पर उन पर क्या प्रतिबंध लगाए जा

सकते हैं। बैंकारी विनियमन अधिनियम 1949 रिजर्व बैंक को अधिकार प्रदान करता है कि समस्या की आरंभिक चेतावनी के संकेत दिखाई देने पर वह आवश्यक कार्रवाई करे। अंतर्राष्ट्रीय श्रेष्ठ प्रथाओं का पालन करने के उद्देश्य से रिजर्व बैंक ने पीसीए योजना की शुरुआत दिसंबर 2002 में की थी। रिजर्व बैंक ने तीन संकेतकों अर्थात् पूंजी अनुपात, निवल एनपीए अनुपात और आस्तियों पर प्रतिलाभ (आरओए) के आधार पर सुधारात्मक कार्रवाई की एक अनुसूची तैयार की।

वित्तीय स्थिरता एवं विकास परिषद (एफएसडीसी) की उप-समिति के निर्देशानुसार इस फ्रेमवर्क की हाल ही में समीक्षा की गई और संशोधित पीसीए फ्रेमवर्क को अप्रैल 2017 से लागू किया गया। पूंजी, आस्तियों की गुणवत्ता और लाभप्रदता के संबंध में ट्रैक किए जाने वाले संकेतकों में क्रमशः जोखिम भारित आस्ति अनुपात (सीआरएआर); सामान्य इक्विटी टियर 1 अनुपात; और निवल एनपीए अनुपात; तथा आरओए अनुपात शामिल है। नई जोखिम सीमाएं निर्धारित की गई हैं जिनका उल्लंघन होने पर पीसीए और अनिवार्य एवं विवेकपूर्ण कार्रवाई लागू हो जाएगी। इसके अतिरिक्त प्रत्येक पीसीए दायरे हेतु विवेकपूर्ण कार्रवाई की सामान्य सूची प्रभावी हो जाएगी (आरबीआई 2017)।

#### संदर्भ :

बैंक ऑफ इंग्लैंड (2016), दि प्रूडेन्शियल रेग्युलेशन अथारिटीज़ अप्रोच टु बैंकिंग सुपरविज़ना लंदन, मार्च

आईएमएफ(2015), युनाइटेड स्टेट्स-फाइनेंशियल सेक्टर असेसमेंट प्रोग्राम, कंटी रिपोर्ट नं. 15/89, वाशिंगटन डी.सी. अप्रैल

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (2017), रिवाइज्ड प्रॉम्प्ट करेक्टिव एक्शन (पीसीए) फ्रेमवर्क फॉर बैंक्स, अप्रैल

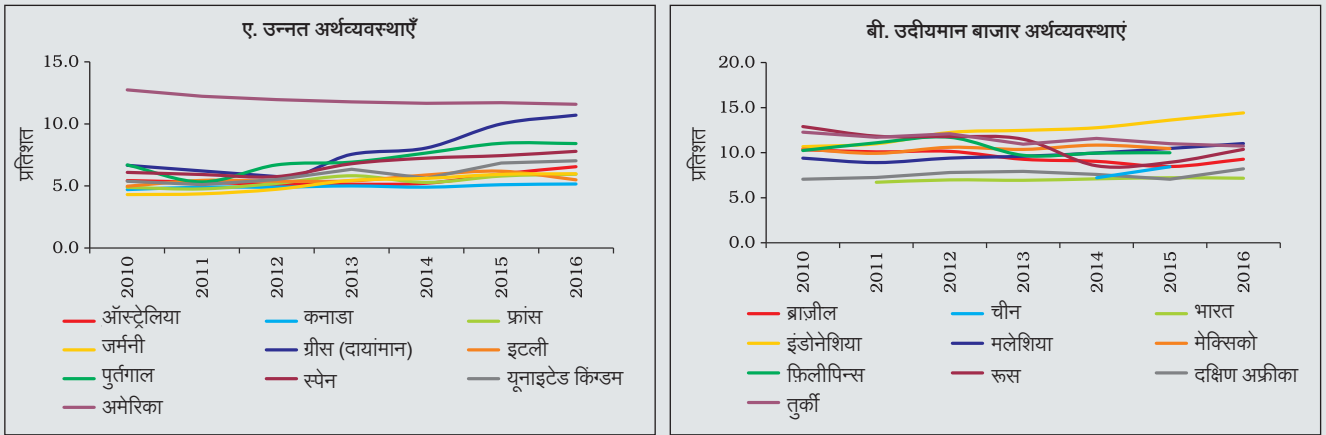
### लीवरेज अनुपात

II.11. बैंकों की पूंजी पर्याप्तता का पता लगाने में अभारित कुल आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात, जिसे लीवरेज अनुपात भी कहा जाता है, जोखिम भारित पूंजी अनुपात के सहायक के रूप में काम करता है। वैश्विक वित्तीय संकट (जीएफसी) ने यह दर्शाया है कि जोखिम भार पर्याप्त नहीं थे और यह कि किसी भी फर्म की आस्तियों हेतु कम से कम कुछ न्यूनतम पूंजी का समर्थन होना चाहिए। बासेल III के अंतर्गत विनियामकीय दबाव के कारण सामान्यतया उन्नत अर्थव्यवस्थाओं और उदीयमान बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाओं में बैंकों के लीवरेज अनुपात में व्यापक सुधार हुआ है, जो 3 प्रतिशत की प्रभावी सीमा निर्धारित करता है। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में यूएस और ग्रीस के बैंकों ने अभारित आस्तियों से संबंधित अधिकतम पूंजी धारित की है, जबकि उदीयमान बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाओं में इंडोनेशिया और मलेशिया के बैंकों में उच्च लीवरेज अनुपात धारित किया गया था (चार्ट II.7)।

### वित्तीय बाजार संकेतक

II.12 बैंक के स्वास्थ्य और लाभप्रदता संबंधी बाजार आधारित संकेतकों ने सुस्थिर सुधार दर्शाया जो बैंकों के तुलन पत्र के सुधार में हुई प्रगति, बैंक लाभप्रदता की बेहतर संभावना और आशावादी बाजार की संभावनाएं प्रदर्शित करता है। यूरोप में बैंकों के इक्विटी मूल्यों ने वर्ष 2016 के दौरान सामान्यतया ऊर्ध्वमुखी गति बरकरार रखी है और उदीयमान बाजारों की अर्थव्यवस्थाओं के बैंकों के सापेक्ष में अमेरिका ने सबसे अधिक लाभ अर्जित किया, विशेषकर वर्ष 2016 के मध्य में (चार्ट II.8)। इसी प्रकार, बैंक क्रेडिट डिफाल्ट स्वैप स्प्रेड (सीडीएस) संकुचित हुए हैं, जो उनके स्वास्थ्य के विषय में निवेशकों की बढ़ती हुई सहजता प्रदर्शित करता है। यूके और उत्तर अमेरिका में बैंकों में सीडीएस का स्प्रेड न्यूनतम है। यूरोपियन बैंकों में घटता सीडीएस स्प्रेड बैंकों के तुलन पत्रों की कमियों को दूर करने में हुई

चार्ट II.7: लीवरेज अनुपात : चुनिंदा अर्थव्यवस्थाएँ



स्रोत: आईएमएफ का वित्तीय सुदृढ़ता संकेतक

प्रगति बताता है, विशेष रूप से इटली, स्पेन और पुर्तगाल में।

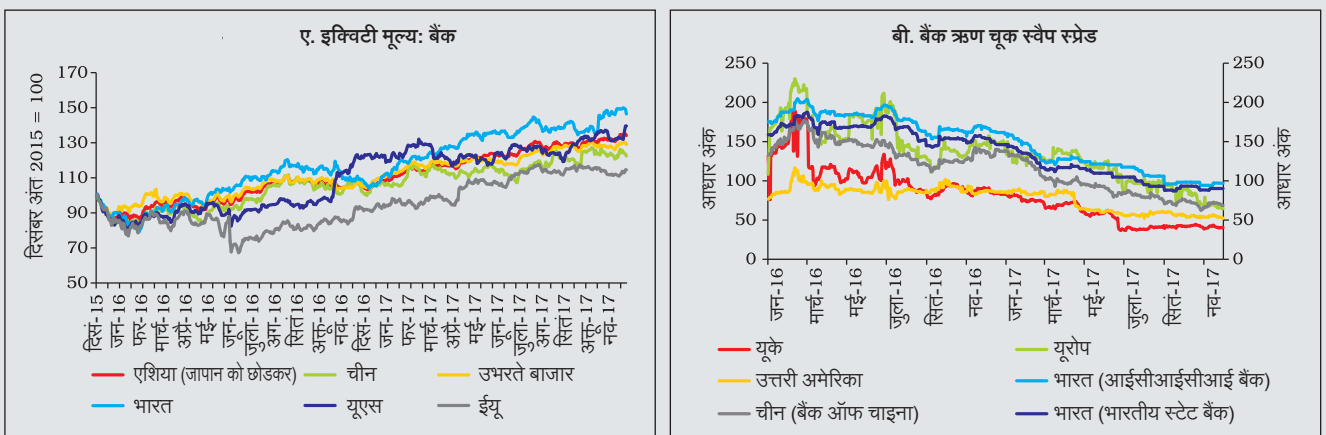
### III. बैंकिंग गतिविधियां: चुनिंदा उन्नत और उदीयमान बाजार अर्थव्यवस्थाएँ

II.13 अमेरिका, यूके और यूरो क्षेत्र की प्रणालीगत बैंकिंग गतिविधियों का वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव पड़ा है और वह लगातार परिवर्द्धित हो रही है। दूसरी तरफ चीन, ब्राज़ील और रूस में बैंकिंग प्रणाली की स्थिति, उदीयमान बाजार अर्थव्यवस्थाओं में उनके समकक्ष बैंकों की स्थितियों की तुलना में, जो कि आर्थिक चक्र के विभिन्न चरणों में हैं और अपने स्वयं के मुद्दों से जूझ रही हैं।

### अमेरिकी बैंकिंग प्रणाली

II.14 अमेरिकी बैंकिंग प्रणाली में क्रेडिट संवृद्धि 2012: ति1 से धनात्मक और व्यापक-आधार वाली थी जो स्थावर संपदा और वाणिज्यिक एवं औद्योगिक ऋण के लिए अनुकूल थी। तथापि, वर्ष 2017 में यूएस में ऋण वृद्धि संयमित हुई क्योंकि कड़े ऋण मानकों ने वाणिज्य स्थावर संपदा, क्रेडिट कार्डों और ऑटो ऋणों को प्रभावित किया और इसके साथ वाणिज्यिक और औद्योगिक दोनों ऋणों के लिए मांग में कमी आई है। दूसरी ओर, वर्ष 2017 में अब तक ऋण की तुलना में जमा वृद्धि किंचित उच्चतर रही है (चार्ट II.9)।

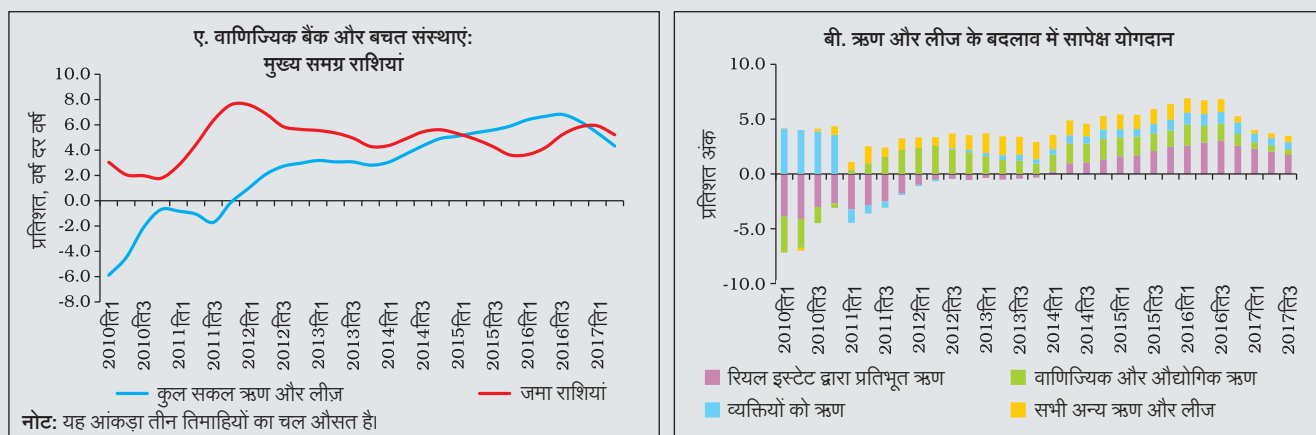
चार्ट II.8: बैंक की स्थिति के बाजार आधारित संकेतक



स्रोत: डाटास्ट्रीम



चार्ट II.9: ऋण और जमा वृद्धि: अमेरिका



नोट: यह आंकड़ा तीन तिमाहियों का चल औसत है।

स्रोत: फेडरल जमा बीमा कॉर्पोरेशन

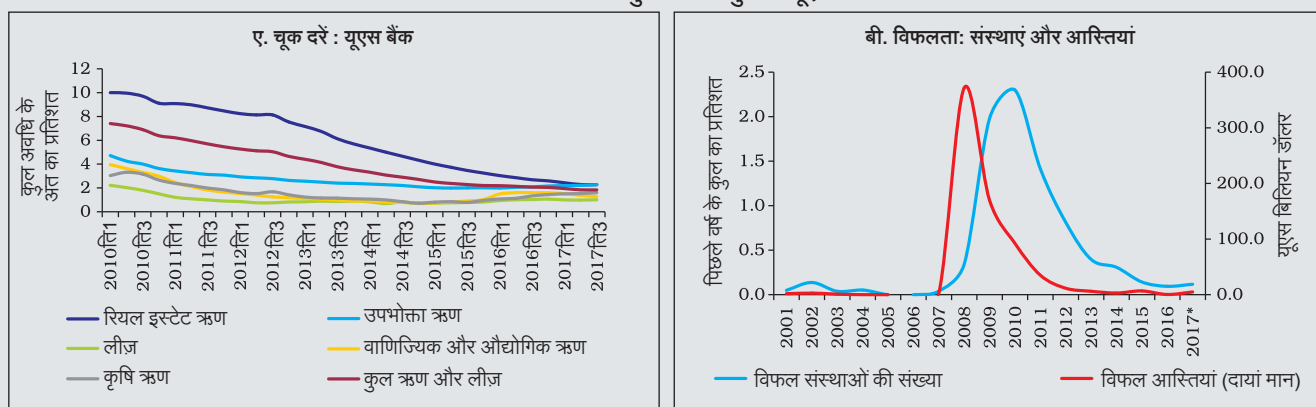
II.15. अमेरिकी अर्थव्यवस्था के पटरी पर लौटने और नीति आधारित बैंक तुलन-पत्र सुधार लागू करने से आस्ति गुणवत्ता में सुधार आया जिसे ऋण चूक दर<sup>4</sup> द्वारा प्रदर्शित किया जाता है, समग्र चूक दरों में स्थावर संपदा ऋणों में हुई चूक दरों का हिस्सा सर्वाधिक रहा। जीएफसी-पश्चात की चरम स्थिति पर पहुंचने बाद इनमें बड़ी गिरावट आई जिससे कम संख्या में संस्थाओं की आस्ति गुणवत्ता में सुधार नजर आया और छोटी राशियों वाली आस्तियों विफल हुईं (चार्ट II.10)। इसके बावजूद ति.2 :

2016 से सब-प्राइम क्रेडिट कार्ड और ऑटो ऋणों हेतु चूक दरों में वृद्धि देखी गई।

यूके की बैंकिंग प्रणाली

II.16. पूंजी और लीवरेज अनुपात में सुधार तथा निधि लागत में गिरावट के कारण 'ब्रेकिजट' के अनिश्चित माहौल के बीच भी यूके स्थित बैंक समुत्थानशील रहे। बैंकों द्वारा दिए जाने वाले उधारों में वृद्धि रही और जमाराशियों की स्थिति बेहतर बनी रही

चार्ट II.10: आस्ति गुणवत्ता में सुधार: यूएस बैंक

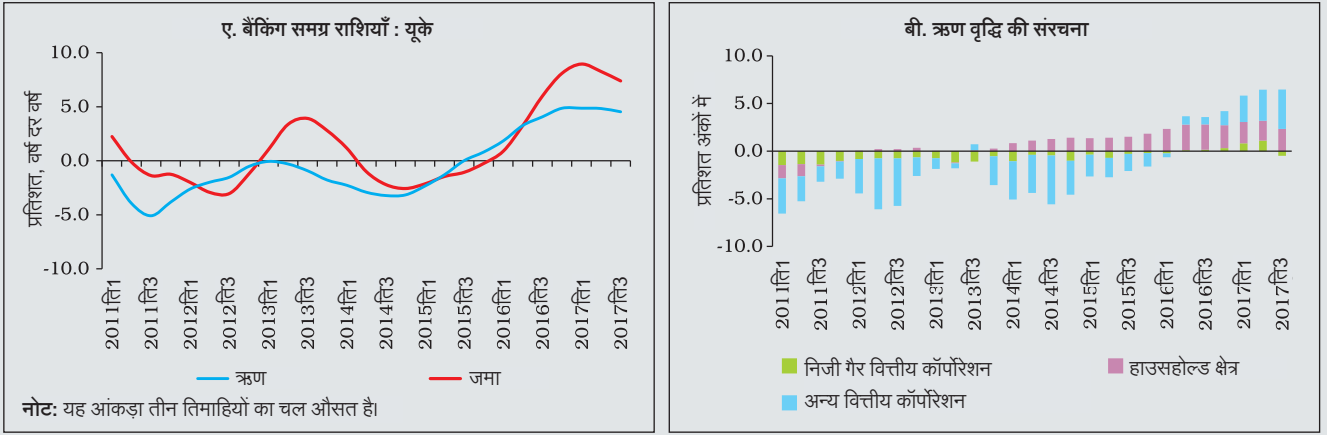


नोट: चार्ट II.10बी में 2017 की स्थिति सितंबर अंत तक की है।

स्रोत: फेडरल जमा बीमा कॉर्पोरेशन और फेडरल रिजर्व

<sup>4</sup> बकाया ऋण (डेलिक्वेंट लोन) वे ऋण होते हैं जिनकी वैध अवधि बीते 30 दिन या अधिक हो गई है और जिन पर अभी भी ब्याज उपचित हो रहा है। इनमें वे ऋण भी शामिल हैं जिन पर अब ब्याज उपचित नहीं हो रहा है। उनकी गणना अवधि के अंत में बकाया ऋणों के प्रतिशत के रूप में की जाती है।

चार्ट II.11: बैंक ऋण और जमा: यूके



स्रोत: बैंक ऑफ इंग्लैंड और सीईआईसी

(चार्ट II.11)। मुख्य रूप से हाउसहोल्ड ऋणों में वृद्धि के कारण और इसके साथ ही हाल की तिमाहियों में अन्य वित्तीय निगमों को जारी ऋणों में हुई बढ़ोतरी के कारण ऋण वृद्धि में बहाली बनी रही। घरेलू ऋणों के मामलों में ऋण-सर्विसिंग संबंधी चिंताएं उभरी हैं क्योंकि बंधक बाजार के सरल ऋण मानकों के चलते उपभोक्ता ऋणों में तेजी से वृद्धि हो रही है जबकि सांकेतिक घरेलू आय में तुलनात्मक दृष्टि से वृद्धि की रफ्तार धीमी है।

II.17 इसी प्रकार बड़े व्यवसायों को दिए जाने वाले ऋणों में वृद्धि द्वारा संचालित हालिया वसूली से वर्ष 2017 में अभी तक व्यवसायों को कर्ज वृद्धि में सुधार देखा गया है। (II.12ए)। दि बैंक ऑफ इंग्लैंड क्रेडिट कंडीशन सर्वे (बीओई-सीसीएस) का मत है कि आने वाले समय में एसएमई हेतु ऋण उपलब्धता में वृद्धि धीमी किन्तु धनात्मक रहेगी तथापि मध्यम आकार के उद्यमों के लिए ऋण उपलब्धता स्थिति में कोई परिवर्तन अपेक्षित नहीं है(II.12सी)। असुरक्षित व्यक्तिगत ऋणों में हो रही चूक के संबंध में भी चिंताएं बनी हुई हैं (II.12डी)। ब्रेकिजट और कम लाभप्रदता संबंधी अनिश्चितताएं बैंकों और वित्तीय स्थिरता के परस्पर संबंधों के बीच अपनी भूमिका निभाती रहेंगी।

### यूरो क्षेत्र की बैंकिंग प्रणाली

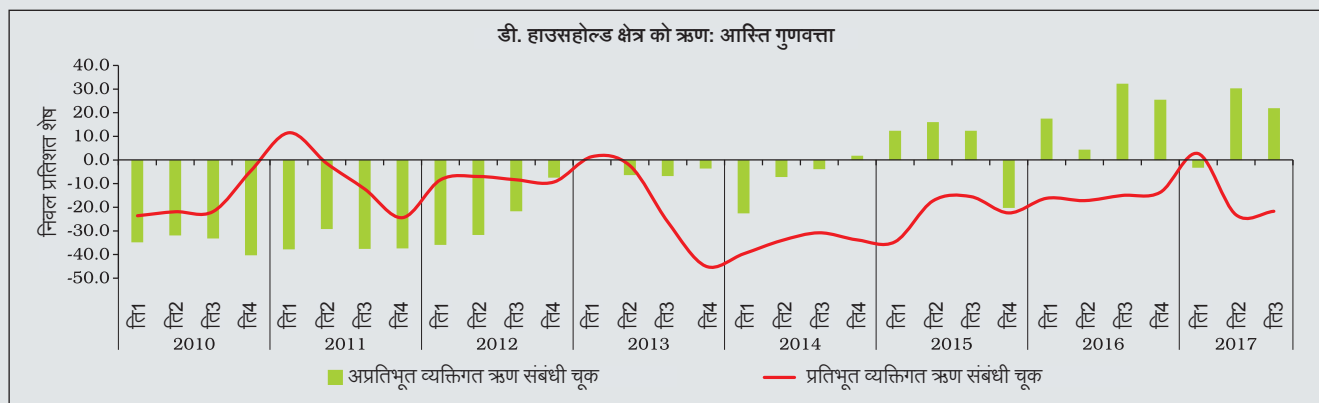
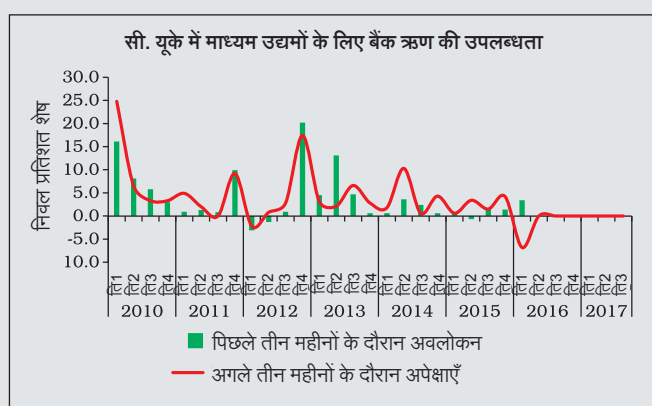
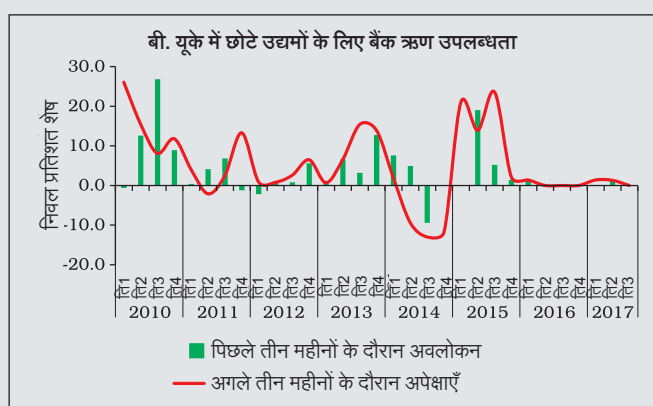
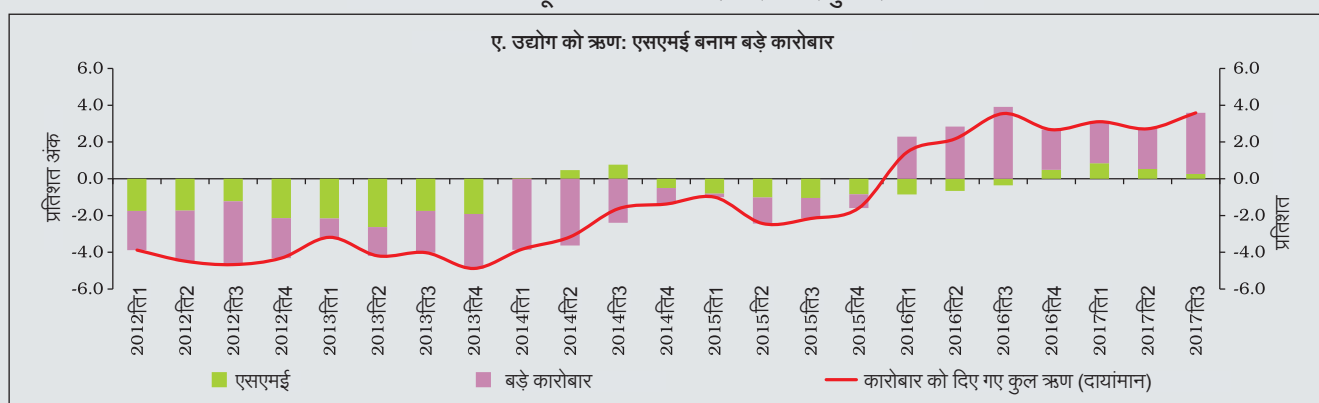
II.18 यूरोप में बहु-प्रतीक्षित चक्रीय बहाली के मजबूत होने से यूरो क्षेत्र के बैंक संवृद्धि को समर्थन प्रदान करने के लिए तैयार हैं।

ऋण के लिए बढ़ती हुई मांग, क्रेडिट मानकों का सहज होना और उद्यमों के लिए ऋण निरस्तीकरण की दरों में कमी, ऋण वृद्धि को निरंतर समर्थन प्रदान कर रही है। समानुपातिक रूप से यूरो क्षेत्र के बैंकों की आस्तियों में ति1: 2017 को समाप्त चार तिमाहियों में बढ़ोतरी हुई है भले उसने थोक वित्तपोषण का सहारा कम ही लिया है (चार्ट II.13 ए)। ऋण सर्वेक्षण यह दर्शाता है कि यूरो क्षेत्र में क्रेडिट स्थितियाँ सामान्यतया सहज हुई हैं (चार्ट II.13बी)। इन गतिविधियों के बावजूद, फ्रांस

को छोड़कर यूरो क्षेत्र की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में गैर वित्तीय क्षेत्र में क्रेडिट का स्तर, यूरो क्षेत्र सॉवरेन डेट संकट पूर्ववर्ती स्तरों से कम बना हुआ है (चार्ट II.13 सी)।

II.19. फिर भी, देश-विशिष्ट मामलों और संरचनागत चुनौतियों जैसे कि 'ओवर बैंकिंग' के कारण आस्ति गुणवत्ता की स्थिति बिगड़ी हुई है जिसका प्रभाव बैंक की लाभप्रदता पर पड़ता है (सारणी II.1)। यूरो क्षेत्र में बैंक के तुलन पत्र में हुई दुरुस्ती उल्लेखनीय सुधार दर्शाता है, 2016 में इटली और पुर्तगाल में बैंक पुनः पूंजीकृत किए गए थे और उसके बाद वर्ष 2017 के जून और जुलाई में स्पेन और इटली के कुछ बैंकों का पुनः पूंजीकरण किया गया। कमजोर बैंकों की लाभप्रदता चुनौती बनी हुई है। औसत रूप से यूरो क्षेत्र की बैंकिंग प्रणाली के लिए इक्विटी पर मिलने वाले लाभ की तुलना में इक्विटी की लागत कहीं अधिक है।

चार्ट II.12: यूके में बैंक ऋण: उपलब्धता और गुणवत्ता



नोट: चार्ट II.12 बी, सी और डी में, निवल प्रतिशत शेष की गणना उन उधारदाताओं की प्रतिक्रियाओं को एक साथ भारत कर की गई है जिन्होंने बाजार शेयर के अनुसार अपने प्रश्नों का उत्तर दिया है। सकारात्मक शेष उन उधारदाताओं को दर्शाता है जहां, शेष पर, पिछली/वर्तमान तीन महीने की अवधि में अधिक ऋण उपलब्ध होने/चूक होने की सूचना दी है/अपेक्षित है, या यह कि, जिन नियमों और शर्तों पर ऋण उपलब्ध कराया गया वह क्रमशः सस्ती या ढीली हो गई हैं।

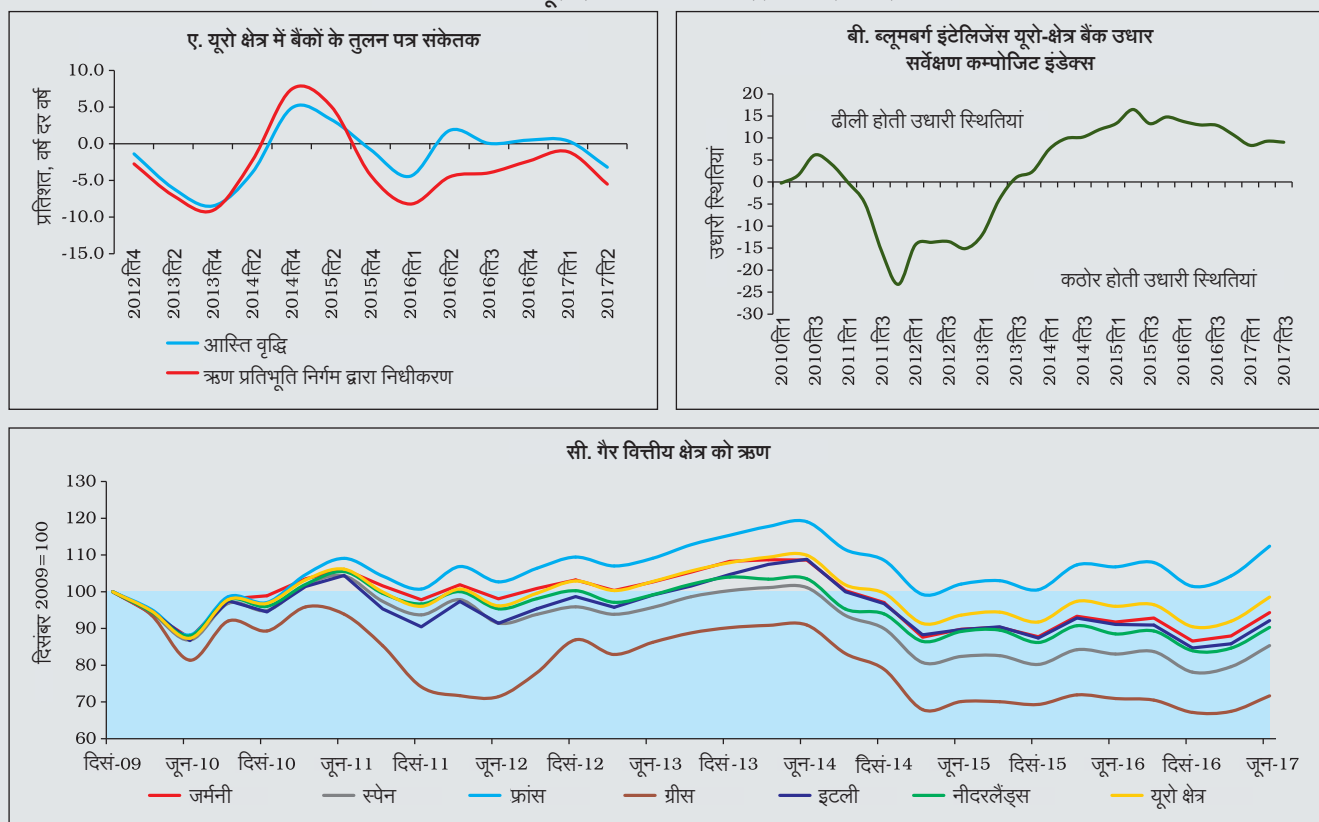
स्रोत: बैंक ऑफ इंग्लैंड

II.20 यूरो क्षेत्र में लंबे समय तक कम ब्याज दर के परिदृश्य में हाउसहोल्ड जमाराशियों को छोड़कर सभी घटकों में बैंक जमाराशियों में वृद्धि 2015 के मध्य से कम रही है (चार्ट II.14)। परिणामस्वरूप, बैंकों के निवल आय मार्जिन दबावग्रस्त रह सकते हैं।

### चीन की बैंकिंग प्रणाली

II.21 क्योंकि चीन की अर्थव्यवस्था अधिक संतुलित तथा स्थिर वृद्धि मॉडल की ओर पुनः उन्मुख हो रही है, इससे क्रेडिट विस्तार की गति में जीएफसी के दौरान प्राप्त किए गए शिखर से गिरावट दर्ज की गई है फिर भी, यह अन्य समकक्ष

चार्ट II.13: यूरो क्षेत्र में बैंकों की आस्तियां और उधार



स्रोत: यूरोपियन सेंट्रल बैंक, ब्लूमबर्ग और फॉर इंटरनेशनल सेटलमेन्ट बैंक

अर्थव्यवस्थाओं से अधिक है (चार्ट II.15ए, चार्ट II.2 भी देखें)। चीन के जीडीपी और उसके क्रेडिट का अंतराल विश्व में

सबसे ज्यादा है, जबकि यह अन्य समकक्ष अर्थव्यवस्थाओं में ऋणात्मक रहा है। निरंतर उच्च ऋण वृद्धि ने चीनी जीडीपी के

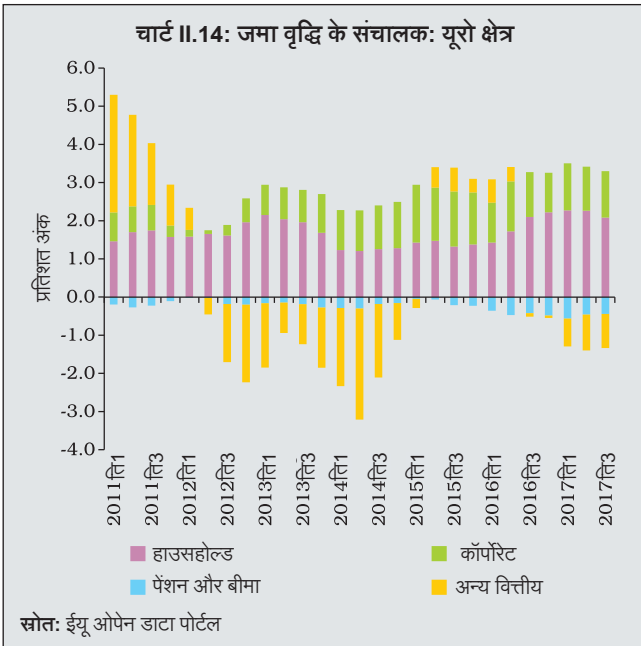
सारणी II.1 : अनर्जक ऋणों और अग्रिमों का अनुपात (एनपीएल अनुपात, प्रतिशत)

देश	सितं-14	दिसं-14	मार्च-15	जून-15	सितं-15	दिसं-15	मार्च-16	जून-16	सितं-16	दिसं-16	मार्च-17	जून-17
ऑस्ट्रिया	8.1	8.0	8.0	7.7	7.4	6.9	6.5	6.0	5.8	5.1	4.6	4.3
बेल्जियम	4.2	4.3	4.0	4.0	3.9	3.9	3.7	3.6	3.4	3.2	2.9	2.8
साइप्रस	55.3	50.8	49.5	49.6	50.0	48.9	48.5	47.4	46.7	45.0	43.8	42.7
एस्टोनिया*	-	-	-	-	-	-	1.6	1.5	1.4	1.3	1.3	1.3
फिनलैंड	2.2	1.6	1.6	1.5	1.4	1.6	1.5	1.5	1.5	1.6	1.6	1.7
फ्रांस	4.6	4.2	4.3	4.2	4.2	4.0	4.0	3.9	3.9	3.7	3.5	3.4
जर्मनी	3.9	3.9	3.7	3.5	3.6	3.6	3.6	3.4	3.2	3.1	2.9	2.7
ग्रीस	37.4	39.7	40.0	42.0	43.5	46.2	46.6	46.9	47.1	45.9	46.2	46.5
आयरलैंड	23.3	21.6	21.0	20.4	19.6	17.8	15.1	14.6	14.4	12.2	11.5	11.7
इटली	16.3	17.0	16.7	16.8	16.9	16.8	16.6	16.4	16.4	15.3	14.8	12.0
लातविया	6.0	5.7	5.6	5.5	4.9	4.0	3.9	3.7	3.6	3.2	2.9	2.7
लिथुआनिया	7.2	6.3	6.4	6.0	5.5	5.1	4.9	4.5	4.1	3.8	3.7	3.3
लक्जमबर्ग	1.3	1.4	1.3	1.5	1.4	1.1	1.2	1.0	1.2	1.1	1.1	1.1
माल्टा*	-	-	7.3	7.2	7.5	6.2	6.8	5.4	4.6	4.4	4.2	3.9
नीदरलैंड	3.1	3.3	3.2	2.9	2.8	2.8	2.7	2.7	2.6	2.5	2.4	2.5
पुर्तगाल	17.0	18.0	18.2	18.1	18.8	19.6	19.8	20.1	19.8	19.5	18.5	17.6
स्लोवाकिया	5.7	5.4	5.5	5.4	5.2	5.2	5.0	4.8	4.6	4.2	4.1	3.8
स्लोवेनिया*	-	-	-	-	24.6	21.5	19.7	19.2	16.3	14.4	13.5	13.3
स्पेन	8.8	8.1	7.7	7.1	6.8	6.3	6.3	6.0	5.9	5.7	5.5	5.4

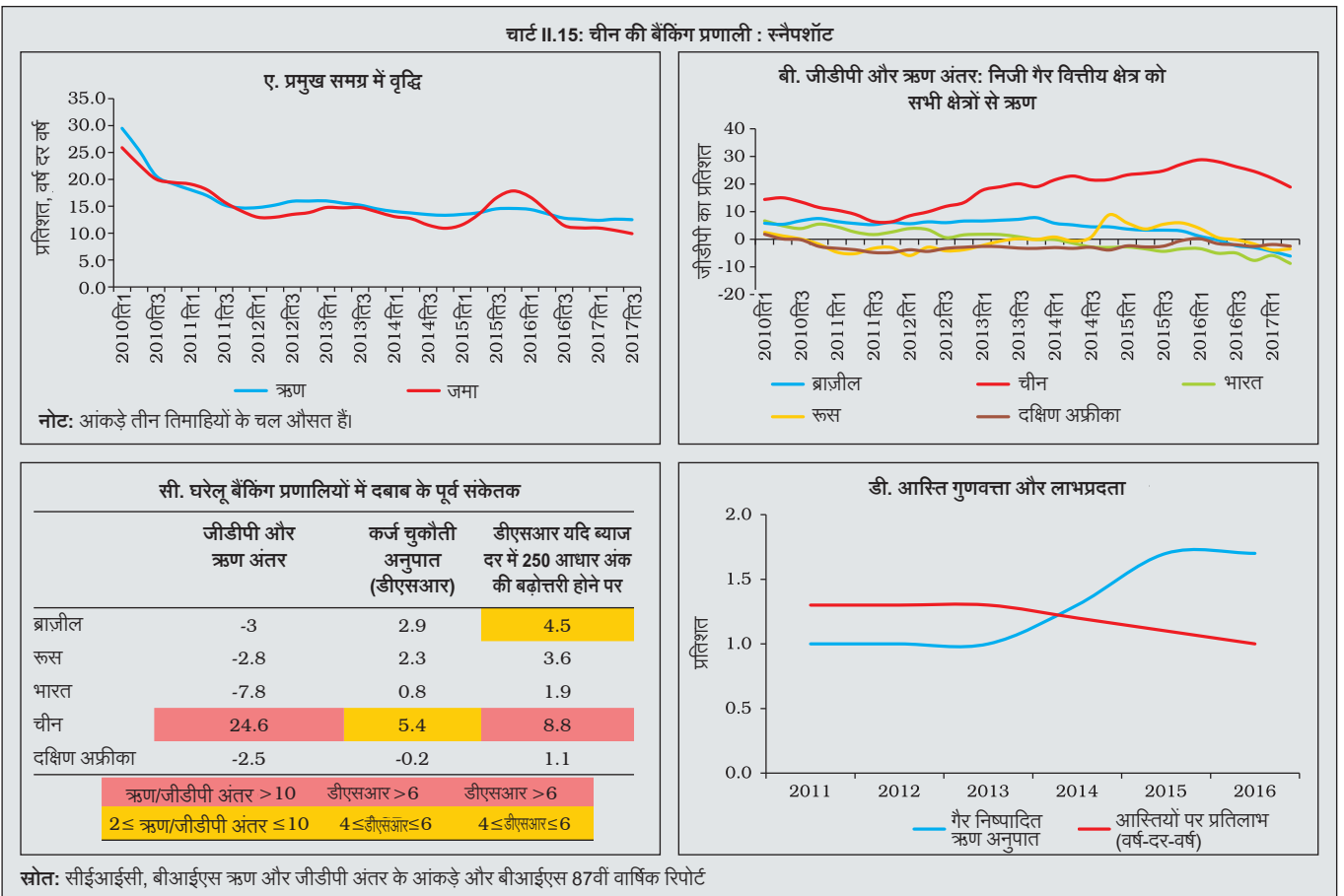
\* कुछ तिमाहियों के लिए आंकड़े घोषित नहीं हैं क्योंकि इन्हें तीन से कम संस्थाओं के लिए रिपोर्ट किया गया था।

नोट: गहरा लाल रंग उच्चतम एनपीएल अनुपात किसी देश के लिए सभी समयावधि को दर्शाता है जब कि गहरा हरा रंग निम्नतम एनपीएल अनुपात निरूपित करता है।

स्रोत: यूरोपियन बैंकिंग अथॉरिटी

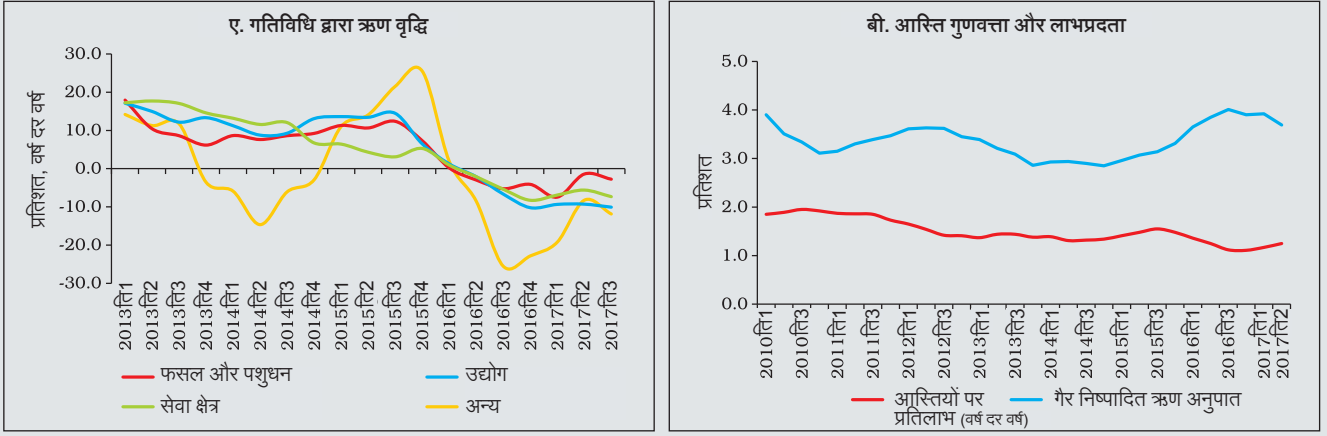


बकाया ऋण को बढ़ाकर चीन की जीडीपी का लगभग दो गुना कर दिया, जो कि वर्ष 2016 के अंत में मौजूद रुझान से लगभग 25 प्रतिशत अधिक है (चार्ट II. 15बी)। यदि इसे उन्नत कर्ज चुकौती अनुपात के साथ मिलाकर देखें तो यह चीन की बैंकिंग प्रणाली में दबाव बढ़ने का एक शुरुआती संकेत हो सकता है (चार्ट II. 15 सी)। चीन के बैंकों की पूंजी स्थिति सुदृढ़ रहने के बावजूद आस्ति गुणवत्ता में गिरावट होने के साथ ही चीन की बैंकिंग प्रणाली की लाभप्रदता भी दबाव में है (चार्ट II.15डी)। आस्ति देयता असमानता तथा बढ़ती चलनिधि और क्रेडिट जोखिम के बावजूद, बहुत सी वित्तीय संस्थाएं थोक वित्तपोषण तथा “छद्म क्रेडिट” पर बहुत अधिक निर्भर बनी हुई हैं। हाल ही में मुद्रा बाजार में हुई उथल-पुथल ने अन्योयाश्रित प्रणाली



<sup>5</sup> अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (2017), ग्लोबल फाइनेन्शियल स्टेबिलिटी रिपोर्ट: इज ग्रोथ एट रिस्क? वाशिंगटन डी. सी., अक्टूबर

चार्ट II.16: ब्राजील के बैंकिंग क्षेत्र - स्नैपशॉट



स्रोत: बैंक ऑफ ब्राजील और सीईआईसी

की कमजोरियों को उजागर किया है क्योंकि किसी एक क्षेत्र में उत्पन्न दबाव से संबंधित दूसरे क्षेत्र भी प्रभावित होते हैं।

II.22 सरकारी स्वामित्व वाले उद्यमों में उच्च ऋण वृद्धि तथा अत्यधिक क्षमता से संबंधित नीतियां मौजूद हैं, जो समष्टि-आर्थिक तथा वित्तीय स्थिरता की स्थिति को सुदृढ़ कर सकती हैं। दूसरी तरफ, अंतरावित्तीय संस्थाओं के बड़े तथा जटिल एक्सपोजर नीतिगत ध्यान की मांग करते हैं। चीन में नीति प्राधिकरण उच्च वृद्धि बनाए रखने तथा डीलीवरेजिंग की आवश्यकता संबंधी उद्देश्यों के बीच उचित संतुलन साधने में लगे हुए हैं।

#### ब्राजील की बैंकिंग प्रणाली

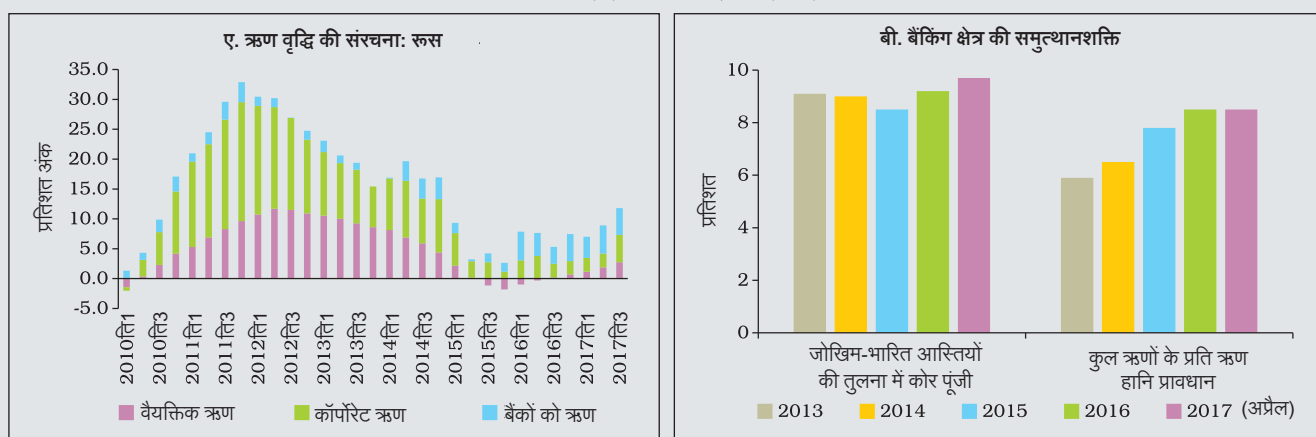
II.23 ब्राजील में वर्ष 2016 की मंदी के कारण बैंकों के लिए चुनौतीपूर्ण परिचालनगत माहौल उत्पन्न हुआ जो गिरते हुए ऋणों तथा घटती बैंक लाभप्रदता और बढ़ते एनपीएल अनुपात में दिखाई दिया (चार्ट II.16 ए और बी)। बकाया ऋण 2016 की दूसरी छमाही से गिरना शुरू हुए तथा 2017 में अब तक उद्योग-ऋणों में भारी गिरावट हुई जिसके कारण क्रेडिट और जीडीपी का अंतराल बढ़ते हुए ऋणात्मक रहा। 2016 में कॉरपोरेट क्रेडिट जोखिमों ने मूर्त रूप ले लिया खासकर बड़े कारपोरेटों के बीच

तथापि, प्रावधानों में होने वाली समानुपातिक वृद्धि ब्राजील में वित्तीय स्थिरता पर प्रतिकूल आरिस्त गुणवत्ता के पड़ने वाले प्रभाव को संभवतया कम करेगी। वर्ष 2017 के दौरान अब तक बैंकिंग क्षेत्र के प्रदर्शन में सुधार हुआ है क्योंकि अर्थव्यवस्था मंदी से उभरी है। एनपीएल कम हुए हैं, आरओए में सुधार हुआ है और बैंकों की पूंजी स्थिति और सुदृढ़ हुई है।

#### रूस की बैंकिंग प्रणाली

II.24 रूसी अर्थव्यवस्था बड़े पैमाने पर बाहरी कारकों द्वारा प्रेरित मंदी से उबर रही है। तेल की कीमतों में हुई वृद्धि इसके बैंकिंग क्षेत्र के निष्पादन में समनुरूप सुधार के साथ ही बहाली में सहायता करेगी। वर्ष 2017 में अब तक ऋण के सभी घटकों के साथ ही व्यक्तिगत ऋण में सकारात्मक वृद्धि हुई है (चार्ट II.17 ए)। बैंकिंग क्षेत्र की समुत्थानशक्ति में सुधार हुआ है क्योंकि संबंधित-पार्टी लेनदेनों पर सीमा निर्धारित की गई है, लेनदेनों में डॉलर के प्रयोग को कम करने के लिए नीतियां बनाई गई हैं और एक श्रेणीबद्ध पर्यवेक्षी ढांचा स्थापित किया गया है (चार्ट II.17बी)। निवल ब्याज मार्जिन की बढ़ोतरी से तथा गैर निष्पादित ऋण को स्थिर करने में कम प्रावधान करने के कारण बैंकों की लाभप्रदता में काफी हद तक वृद्धि हुई है।

चार्ट II.17: रूस के बैंकिंग क्षेत्र - स्नैपशॉट



स्रोत: सीईआईसी और आईएमएफ

**IV विश्व के सबसे बड़े बैंक : लाभप्रदता, सेहत एवं सुदृढ़ता<sup>6</sup>**

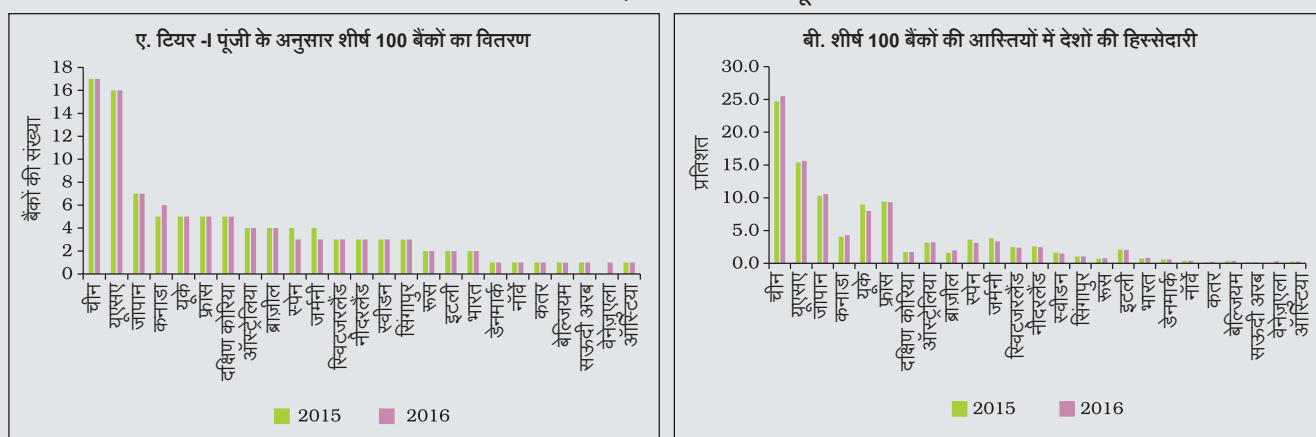
II.25 विश्व के शीर्ष 100 बैंकों के प्रदर्शों की रैंकिंग टियर 1 कैपिटल के संदर्भ में करने पर 2016 की स्थिति काफी हद पिछले वर्ष की तरह ही थी। वैश्विक अर्थव्यवस्था में ईएमई बैंकों की बढ़ती भूमिका के अनुरूप, शीर्ष 100 बैंकों (रैंकिंग टियर 1 कैपिटल के संदर्भ में करने पर) में उनकी संख्या बढ़ी है जो कुल बैंकिंग आस्तियों (चार्ट II.18) में उनकी भागीदारी में भी प्रतिबिंबित हुई। दिलचस्प बात यह है कि शीर्ष 100 में शामिल लगभग सभी ईएमई बैंकों ने कुल आस्तियों में अपनी हिस्सेदारी में बढ़ोतरी की

जिसमें चीन के बैंक सबसे अग्रणी रहे जबकि 2015 और 2016 के बीच यूके के बैंकों को सबसे अधिक नुकसान हुआ।

**लाभप्रदता और आस्ति गुणवत्ता**

II.26 सबसे बड़े 100 बैंकों की लाभप्रदता, जो कि आस्तियों पर प्रतिलाभ के आधार पर मापी जाती हैं, वर्ष 2015 और 2016 के बीच लगभग अपरिवर्तित रही; 2015 के 96 बैंकों की तुलना में वर्ष 2016 में 95 बैंकों ने आस्तियों पर सकारात्मक प्रतिलाभ दर्ज किया (चार्ट II.19ए) हालांकि, वर्ष 2015 की तुलना में वर्ष 2016 में अधिकतर बैंकों का आस्तियों पर प्रतिलाभ 2-3

चार्ट II. 18: विश्व के सबसे बड़े बैंकों का वितरण: पूंजी और आस्तियां



स्रोत: द फाइनेंसियल टाइम्स बैंकर डाटाबेस

<sup>6</sup> फाइनेंसियल टाइम्स के बैंकर डाटाबेस से डाटा लिया गया है। टियर 1 पूंजी की वरीयता के आधार पर सबसे बड़े 100 बैंकों से संबंधित विश्लेषण।

चार्ट II.19: प्रतिलाभ और आस्ति गुणवत्ता



नोट: चार्ट II.19बी में 93 बैंक नमूना प्रस्तुत करते हैं  
 स्रोत: द फाइनेंशियल टाइम्स बैंकर डाटाबेस

प्रतिशत रहा। आस्तियों की गुणवत्ता में सुधार होने से वर्ष 2015 की तुलना में वर्ष 2016 में कुछ ही बैंकों का अनर्जक उधार 5 प्रतिशत से अधिक रहा, जिससे लाभप्रदता में क्रमिक वृद्धि हुई (चार्ट II.19बी)।

II.27 आस्ति गुणवत्ता में सुधार के साथ-साथ बैंकों की सुदृढ़ पूंजीगत स्थितियों ने उन्हें वित्तीय लीवरेज में सहवर्ती कमी लाने में सक्षम बनाया। पिछले वर्ष के मुकाबले वर्ष 2016 में शीर्ष 100 बैंकों में शामिल और अधिक बैंकों ने आस्तियों की तुलना में पूंजी स्तर अधिक बनाए रखा; वर्ष 2015 के 50 बैंकों की तुलना में

वर्ष 2016 में 53 बैंकों का पूंजी आस्ति अनुपात (सीएआर) कम से कम 6 प्रतिशत था (चार्ट II.20ए)। इसके अलावा, सभी शीर्ष 100 बैंकों ने बासेल III के द्वारा निर्धारित न्यूनतम विनियामकीय अपेक्षा के अनुसार 3 प्रतिशत से अधिक सीएआर बनाए रखा।

II.28 वर्ष 2016 में सीएआर में सुधार के अलावा बैंकों की जोखिम के लिए समायोजित संपत्ति से संबंधित पूंजी स्थिति में भी सुधार हुआ। पिछले साल की तुलना में 2016 में जोखिम भारत आस्ति अनुपात (सीआरएआर)<sup>7</sup> के लिए 16 प्रतिशत से अधिक पूंजी वाले बैंकों की संख्या में इजाफा हुआ (चार्ट II.20बी),

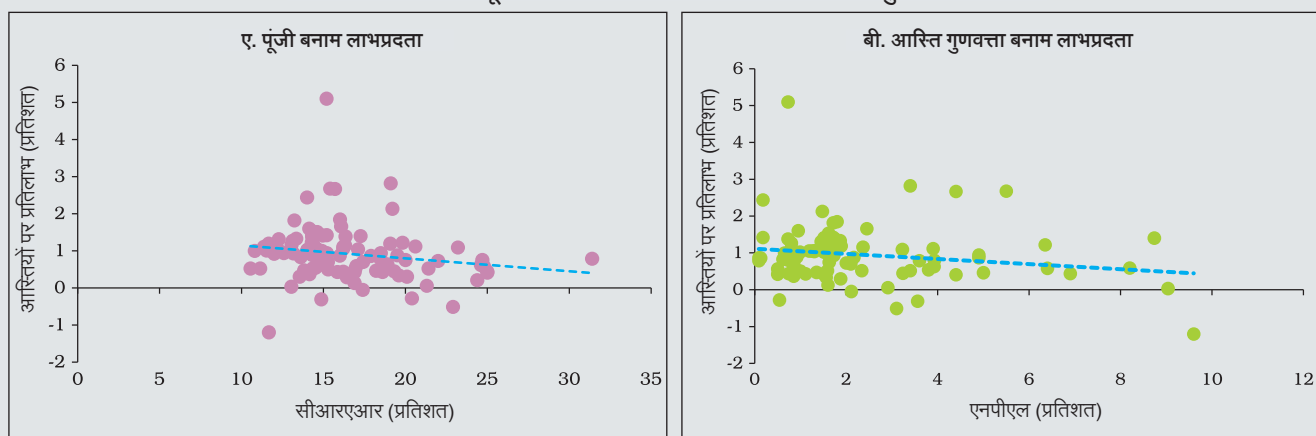
चार्ट II.20: बैंक सुदृढ़ता



<sup>7</sup> सीआरएआर को मापने के लिए टियर 1 और टियर 2 पूंजी को जोड़कर, दोनों की शुद्ध कटौतियां, कुल जोखिम भारत आस्तियों से विभाजित किया जाता है और उसे प्रतिशत में व्यक्त किया जाता है।



चार्ट II.21: पूंजी पर्याप्तता बनाम लाभप्रदता बनाम आरिस्त गुणवत्ता



स्रोत: द फाइनेंसियल टाइम्स बैंकर डाटाबेस

पूंजी का यह स्तर बासेल III में निर्धारित स्तर से दोगुना है। इसके बावजूद उच्च पूंजी वाले बैंक सबसे लाभदायक नहीं थे क्योंकि प्रावधानों और आय में हानि होने के कारण उनकी आरिस्तियों की गुणवत्ता में कमी आ रही थी (चार्ट II.21ए और बी)।

## V वैश्विक नीतिगत सुधार

II.29 जीएफसी से सबक लेते हुए, भविष्य में आने वाली उथल-पुथल को रोकने व उससे होने वाली हानि को कम करने और जी 20 के उद्देश्यों जैसे कि मजबूत, सुस्थिर और संतुलित विकास का समर्थन करने हेतु उन्मुक्त और एकीकृत वैश्विक वित्तीय संरचना के पोषण के लिए कई सुधार किए जा रहे हैं।

### विनियामकीय सुधार

II.30 सुधार कार्यक्रम के चार मुख्य घटक हैं: (i) वित्तीय संस्थानों को अधिक आघातसहनीय बनाना; (ii) टू-बिग-टू-फेल को समाप्त करना (टीबीटीएफ); (iii) व्युत्पन्नी बाजार को सुरक्षित बनाना; और (iv) आभासी बैंकिंग को आघातसहनीय सकने में सक्षम बाजार आधारित वित्त-व्यवस्था में परिवर्तित करना। सुधारों के मुख्य घटकों पर सहमति बन गई है और ये सुधार कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं। इन सुधारों के अलावा अवचार जोखिम और करेसपांडेंट बैंकिंग को कम करने, 'फिनटेक' के संभावित वित्तीय स्थिरता प्रभावों का विश्लेषण करने के लिए अभिशासन ढांचे को सशक्त बनाने का कार्य किया जा रहा है।

### वित्तीय संस्थानों को अधिक आघातसहनीय बनाना

II.31 बासेल III के मानकों के कार्यान्वयन में काफी प्रगति हुई है (सारणी II.2)। जिसके परिणामस्वरूप, बैंकों के पास पहले की अपेक्षा कहीं अधिक चलनिधि आरिस्तियां और बड़ा पूंजी आधार है जिससे ऋण आपूर्ति को बाधित किए बिना ही उन्हें आघातसहनीय बनाया जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय सभी प्रमुख बैंकों ने निर्धारित समय-सीमा के काफी पहले ही जोखिम आधारित पूंजी और लीवरेज अनुपात आवश्यकताओं को पूरा कर लिया है और वैश्विक चलनिधि मानक बैंक वित्तपोषण मॉडलों में बदलाव को उत्प्रेरित कर रहे हैं। इसके अलावा, जिन अधिकार क्षेत्रों में जी-एसआईबीएस (अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण बैंक) के मुख्यालय अवस्थित हैं उन्होंने उच्चतर हानि अवशोषण अपेक्षाओं को लागू कर दिया है।

### टू-बिग-टू-फेल को समाप्त करना

II.32 वैश्विक प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण बैंकों (जी-एसआईबी) एवं वैश्विक प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण बीमाकर्ताओं (जी-एसआईआई) को चिह्नित करने की प्रक्रिया मौजूद है और जी-एसआईबी एवं जी-एसआईआई की सूची की वार्षिक समीक्षा ऐसी संस्थाओं का सतत मूल्यांकन सुनिश्चित करती हैं (सारणी 3)। जी-एसआईबी उच्चतर पूंजी बफर जरूरतों के अधीन हैं एवं इन्हें बासेल III की विनियामक पूंजी मानदंडों के अतिरिक्त कुल-क्षति सहने की क्षमता (टीएलएसी) से संबंधित जरूरतों को पूरा करना होता है। जी-एसआईबी द्वारा 2009 से आरिस्तियां कम करते हुए लगभग \$1 ट्रिलियन यूएस डॉलर तक पूंजी बढ़ाई गई

**सारणी II.2: बासेल III को अपनाने की स्थिति (मार्च 2017 – अंत) बासेल समिति के सदस्यों के अधिकार क्षेत्रों की संख्या**

बासेल मानक	बीसीबीएस द्वारा सहमत कार्यान्वयन की तारीख	मार्च 2017 के अंत तक स्थिति		
		जारी डाफ्ट नियम	जारी किए गए अंतिम नियम (प्रभाव में नहीं)	प्रभावी अंतिम नियम
<b>जोखिम आधारित पूंजी मानक</b>				
पूंजी की परिभाषा	जन 2013	--	--	27
पूंजी कंजरवेशन बफर	जन 2016	--	--	27
प्रति-चक्रीय बफर	जन 2016	1	--	26
निधियों में इक्विटी निवेश हेतु पूंजी आवश्यकता	जन 2017	11	--	8
प्रतिपक्षी क्रेडिट जोखिम को मापने के लिए मानकीकृत पद्धति (एसए – सीसीआर )	जन 2017	13	1	5
प्रतिभूतिकरण फ्रेमवर्क	जन 2018	11	3	--
विकेन्द्रीकृत रूप से निपटान किए गए डेरिवेटिव हेतु मार्जिन आवश्यकताएँ	सितं 2016	2	--	18
सीसीपी के लिए पूंजी आवश्यकताएँ	जन 2017	11	1	5
<b>चलनिधि मानक</b>				
चलनिधि कवरेज अनुपात (एलसीआर)	जन 2015	--	--	27
एलसीआर प्रकटीकरण आवश्यकताएँ	जन 2015	1	--	16
निवल स्थिर वित्तपोषण अनुपात (एनएसएफआर)	जन 2018	16	1	1
एनएसएफआर प्रकटीकरण संबंधी आवश्यकताएँ	जन 2018	12	--	1
<b>अन्य बासेल III मानक</b>				
चलनिधि अनुपात	जन 2018	2	1	19
चलनिधि अनुपात प्रकटीकरण आवश्यकताएँ	जन 2015	1	--	26
जी – एसआईबी आवश्यकताएँ	जन 2016	--	--	19
डी – एसआईबी आवश्यकताएँ	जन 2016	1	--	26
पिलर 3 प्रकटीकरण संबंधी आवश्यकताएँ	दिसं 2016	3	9	8
बड़े एक्सपोजर	जन 2018	11	--	2
स्रोत: बैंकिंग पर्यवेक्षण संबंधी बासेल समिति (2017), बासेल मानकों का क्रियान्वयन, जुलाई				

है जिससे तुलनपत्र मजबूत हुआ है। इसके अलावा, चलनिधि एवं ऋण-जमा अनुपात में सुधार हुआ है। इससे थोक निधीयन पर निर्भरता कम हुई है, जबकि लगभग दो तिहाई जी-एसआईबी की गौण आस्तियों का निपटान<sup>8</sup> कर दिया गया है। बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बासेल समिति (बीसीबीएस) द्वारा मार्च 2017 में जी-एसआईबी के लिए एक नया मूल्यांकन ढांचा लाया गया एवं

**सारणी II.3: सुधारों का क्रियान्वयन – समाधान (जून 2017 के अंत की स्थिति)**

	जी-एसआईबी के मामले में न्यूनतम टीएलए-सी अपेक्षा (गृह अधिकार-क्षेत्र)	बैंकों के लिए अंतरण/ बेल-इन/ अस्थायी स्थगन शक्तियां	प्रणालीगत बैंकों के मामले में वसूली और समाधान संबंधी आयोजना	बीमाकर्ताओं के मामले में अंतरण/ ब्रिज/ रन-ऑफ शक्तियां
ब्राजील				
चीन				
जर्मनी				
भारत				
इंडोनेशिया				
रूस				
दक्षिण अफ्रीका				
तुर्की				
यूके				
यूएसए				
<b>व्याख्या:</b>				
जी-एसआईबी के लिए बाह्य कुल हानि अवशोषण क्षमता (टीएलएसी) की आवश्यकता से संबंधित अंतिम नियम प्रकाशित एवं लागू कर दिया गया है। वित्तीय संस्थाओं (मुख्य विशेषताओं) के लिए प्रभावी समाधान व्यवस्थाओं की एफएसबी मुख्य विशेषताओं के समाधान व्यवस्था के अंश लागू/कार्यरत हैं। पावर कॉलम के लिए, बैंकों (अंतरण, बेल-इन एवं अस्थायी रोक) एवं बीमाकर्ताओं (अंतरण, ब्रिज एवं रन-ऑफ) के लिए समाधान शक्तियों के सभी तीन भाग उपलब्ध हैं। प्रणालीगत बैंकों के लिए रिकवरी एवं समाधान दोनों योजना प्रक्रियाएं कार्यरत हैं।				
जी-एसआईबी के लिए बाह्य कुल हानि अवशोषण क्षमता (टीएलएसी) की आवश्यकता से संबंधित अंतिम नियम अथवा नियम का मसौदा प्रकाशित कर दिया गया है, परंतु उन्हें अभी तक लागू नहीं किया गया है। मुख्य विशेषताओं में समाधान व्यवस्था के अंश आंशिक रूप से लागू/कार्यरत हैं। पावर कॉलम के लिए, बैंकों (अंतरण, बेल-इन एवं अस्थायी रोक) एवं बीमाकर्ताओं (अंतरण, ब्रिज एवं रन-ऑफ) के लिए समाधान शक्तियों के एक या दो भाग उपलब्ध हैं। प्रणालीगत बैंकों के लिए रिकवरी योजना कार्यरत है, परंतु समाधान योजना प्रक्रियाएं कार्यरत नहीं हैं।				
जी-एसआईबी के लिए बाह्य कुल हानि अवशोषण क्षमता (टीएलएसी) से संबंधित नियम का मसौदा प्रकाशित नहीं हुआ है। मुख्य विशेषताओं में समाधान व्यवस्था के अंश लागू/कार्यरत नहीं हैं। पावर कॉलम के लिए, बैंकों (अंतरण, बेल-इन एवं अस्थायी रोक) एवं बीमाकर्ताओं (अंतरण, ब्रिज एवं रन-ऑफ) के लिए तीनों में से कोई भी समाधान शक्तियां उपलब्ध नहीं हैं। प्रणालीगत बैंकों के लिए न तो रिकवरी और न ही समाधान योजना प्रक्रियाएं कार्यरत हैं।				
आवश्यकताओं की रिपोर्टिंग 'लागू नहीं' के रूप में की गई है।				
स्रोत: वित्तीय स्थिरता बोर्ड (2017), जी20 वित्तीय विनियामकीय सुधारों का कार्यान्वयन एवं प्रभाव, तीसरी वार्षिक रिपोर्ट, जुलाई				

अंतरराष्ट्रीय बीमा पर्यवेक्षक संघ (आईएआईएस) बीमा क्षेत्र के लिए प्रणालीगत जोखिम का आकलन करने के लिए कार्यकलाप आधारित पद्धति विकसित कर रहा है। वैश्विक गैर-बैंक गैर-बीमाकर्ता प्रणालीगत महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थाओं (एनबीएनआई जी-एसआईएफआई) की पहचान करने का कार्य भी चल रहा है।

<sup>8</sup> अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (2017), 'ग्लोबल फाइनेन्शियल स्टेबिलिटी रिपोर्ट : इज ग्रोथ ए रिस्क?' वाशिंगटन डीसी

### व्युत्पन्नी बाजारों को सुरक्षित बनाना

11.33 ओवर-द-काउंटर (ओटीसी) व्युत्पन्नी बाजार सुधारों, मुख्यतः कारोबार की रिपोर्ट करने एवं केंद्रीय रूप से समाशोधित न किए गए व्युत्पन्नी सौदे के लिए अंतरिम उच्चतर पूंजी जरूरतों (सारणी 11.4), को लागू करने की दिशा में सार्थक प्रगति हुई है। लगभग तीन-चौथाई क्षेत्राधिकारों ने व्यापक केंद्रीय समाशोधन ढांचे को लागू कर दिया है, जबकि लगभग आधे क्षेत्राधिकारों ने व्यापक मार्जिन जरूरतों एवं ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म फ्रेमवर्क को क्रियान्वित कर दिया है। ट्रेड रिपोजिटरी के प्रयोग के माध्यम से पारदर्शिता में सुधार के क्षेत्र में प्रगति हुई है, जबकि केंद्रीय प्रतिपक्षकारों (सीसीपी) को उच्चतर पूंजी के निर्धारण द्वारा ज्यादा आघात-सहनीय बनाया गया है। इन प्रगतियों के अतिरिक्त सीसीपी की आघात सहने की क्षमता, वसूली की योजना और समाधान निकालने की क्षमता संबंधी सुधार कार्य जारी हैं। डेटा की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए और ट्रेड रिपोजिटरी डेटा की

रिपोर्टिंग एवं उन तक पहुंच बनाने के लिए विधिक बाधाओं को हटाने के प्रयास भी चल रहे हैं।

आभासी बैंकिंग को आघात सहनीय बाजार आधारित वित्त व्यवस्था में परिवर्तित करना

11.34. आभासी बैंकों के जोखिम तत्व, जिससे जीएफसी के दौरान अस्थिरता उत्पन्न हुई, का प्रभाव अब समाप्त हो गया है और वर्तमान में वे वित्तीय स्थिरता के लिए जोखिम पेश नहीं कर रहे हैं। रेपो बाजार और मुद्रा बाजार निधियों (एमएमएफ) में निहित कमजोरियों को दूर कर दिया गया है (सारणी 11.5)। इंटरनेशनल ऑर्गेनाइजेशन ऑफ सिक्युरिटी कमीशन (आईओएससीओ) द्वारा संस्तुत नीतिगत उपायों के कार्यान्वयन से मुद्रा बाजार निधियों में अफरा-तफरी का जोखिम कम हो रहा है। यूएस और चीन के अतिरिक्त पाँच अन्य वित्तीय स्थिरता बोर्ड (एफएसबी)

**सारणी 11.5: सुधारों को लागू करना – आभासी बैंकिंग (जून 2017 के अंत तक)**

	मुद्रा बाजार निधियाँ (एमएमएफ)	प्रतिभूतिकरण
ब्राजील		**
चीन		
जर्मनी	**	
भारत		
इंडोनेशिया	**	
रूस	**	
दक्षिण अफ्रीका	**	
तुर्की	**	
यूके	**	*
यूएसए		

**व्याख्या:**

एमएमएफ - मूल्यांकन, चलनिधि प्रबंधन और (जहां लागू हो) स्थिर निवल आस्ति कीमत (एनएवी) के लिए लागू अंतिम कार्यान्वयन उपाया प्रतिभूतिकरण - एक प्रोत्साहन संरक्षण व्यवस्था और प्रकटन आवश्यकताएं लागू करने हेतु अंतिम उपायों (और जहां प्रासंगिक लागू हो) को लिया गया है।

मूल्यांकन, चलनिधि प्रबंधन और (जहां लागू हो) स्थिर एनएवी के लिए ड्राफ्ट / अंतिम उपाय लागू हैं अथवा आंशिक रूप में लागू हैं। प्रतिभूतिकरण - प्रोत्साहन संरक्षण व्यवस्था को लागू करने और प्रकटन आवश्यकताओं के लिए ड्राफ्ट/अंतिम उपाय अपनाने हेतु प्रकाशित/लागू या आंशिक रूप से लागू करना।

एमएमएफ- ड्राफ्ट कार्यान्वयन उपाय मूल्यांकन, चलनिधि प्रबंधन और (जहां लागू हो) स्थिर एनएवी के लिए प्रकाशित नहीं हैं। प्रतिभूतिकरण - प्रोत्साहन संरक्षण व्यवस्था को लागू करने और प्रकटन आवश्यकताओं के लिए ड्राफ्ट अपनाए गए उपाय प्रकाशित नहीं किए गए।

\* / \*\* : कम से कम एक सुधार क्षेत्र (एमएमएफ) के एक या अधिक/सभी तत्वों में समग्र रेटिंग की तुलना में कार्यान्वयन अधिक उन्नत है या बाजार के एक या अधिक / सभी क्षेत्रों में (प्रतिभूतिकरण)। आईओएससीओ ने इन क्षेत्रों में 2015 की अपनी सहकर्मी समीक्षा आकलन पद्धति का उपयोग करते हुए 2017 के लिए अद्यतन किया था।

स्रोत: वित्तीय स्थिरता बोर्ड (2017), जी20 वित्तीय विनियामकीय सुधारों का कार्यान्वयन एवं प्रभाव, तीसरी वार्षिक रिपोर्ट, जुलाई

**सारणी 11.4: सुधारों को लागू करना – काउंटर से इतर डेरिवेटिव (जून 2017 के अंत तक)**

	व्यापार रिपोर्टिंग	केंद्रीय समाशोधन	प्लेटफॉर्म ट्रेडिंग	मार्जिन
ब्राजील	एफ			
चीन	आर, डी, एफ			
जर्मनी				
भारत	डी, एफ			
इंडोनेशिया	आर			
रूस				
दक्षिण अफ्रीका	डी, एफ			
तुर्की	डी, एफ			
यूके				
यूएसए				

**व्याख्या:**

संबंधित लेनदेनों के 90 प्रतिशत से अधिक के लिए विधायी संरचना और मानक/मानदंड/अपेक्षाएं (यथा प्रयोज्य) लागू हैं।

विनियामकीय संरचना को लागू किया जा रहा है।

इन स्थान पर विनियामकीय संरचना लागू नहीं है।

आर: व्यापार रिपोजिटरी (टीआर) को रिपोर्टिंग में घरेलू भागीदारों के लिए विधि बाधाएं जिनके लिए समाधान / उपचार उपलब्ध नहीं हैं।

डी: प्राथमिक प्राधिकारी के अलावा अन्य घरेलू प्राधिकारियों को घरेलू टीआर डाटा तक पहुंच बनाने की अनुमति नहीं है उल्लेखनीय शर्तों के साथ अनुमति है।

एफ: विदेशी प्राधिकारियों को घरेलू टीआर डाटा तक प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष पहुंच बनाने की अनुमति नहीं है अथवा केवल उल्लेखनीय शर्तों के साथ अनुमति है।

स्रोत: वित्तीय स्थिरता बोर्ड (2017), जी20 वित्तीय विनियामकीय सुधारों का कार्यान्वयन एवं प्रभाव, तीसरी वार्षिक रिपोर्ट, जुलाई

क्षेत्राधिकारों में इन सिफारिशों को लागू किया गया है। एमएमएफ पोर्टफोलियो का उचित मूल्यांकन लागू करने के कार्य में प्रगति की गई है, हालांकि चलनिधि प्रबंधन में सीमित प्रगति हुई है। गैर-बैंकों की गतिविधियों के रुझानों और जोखिमों को चिह्नित करने के प्रयासों में सहभागिता बढ़ी है।

#### कदाचार संबंधी जोखिमों को दूर करना

11.35 कदाचार संबंधी जोखिमों को दूर करने के लिए एफएसबी द्वारा विभिन्न प्रकार के निवारक उपायों के जरिए एक कार्य-योजना कार्यान्वित की जा रही है, जिसके अंतर्गत (i) वित्तीय संस्थाओं के अभिशासन और क्षतिपूर्ति ढांचे में सुधार करने; (ii) नियत आय, पण्य-वस्तुओं और मुद्रा बाजारों में संचालन संबंधी वैश्विक मानकों में सुधार करने; तथा (iii) प्रमुख वित्तीय बेन्चमार्क व्यवस्थाओं में सुधार करना ताकि उनमें हेरफेर के जोखिम को कम करने के प्रति ध्यान दिया जाता है।

#### प्रतिनिधि आधारित बैंकिंग

11.36 प्रतिनिधि आधारित बैंकिंग में गिरावट का आकलन करने और उसके समाधान हेतु एफएसबी चार बिंदुओं वाली कार्य-योजना कार्यान्वित कर रहा है, जिसके तहत (i) किसी मुद्दे के आयामों और निहितार्थों की जांच करना; (ii) प्राथमिकता के मामले के रूप में विनियामक अपेक्षाओं को स्पष्ट करना, जिसके अंतर्गत वित्तीय कार्रवाई कार्यबल (एफएटीएफ) और बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बासेल समिति का मार्गदर्शन प्राप्त करना शामिल हैं; (iii) प्रभावित उत्तरदाता बैंकों के मूल-स्थान वाले अधिकार-क्षेत्रों में घरेलू स्तर पर क्षमता-निर्माण करना; तथा (iv) कॉरस्पॉन्डेंट बैंकों द्वारा समुचित सावधानी बरतने के उपायों को

सुदृढ़ बनाना सम्मिलित हैं। एफएसबी द्वारा प्रकाशित प्रतिनिधि बैंकिंग डेटा रिपोर्ट में यह दर्शाया गया है कि प्रतिनिधि बैंकिंग संबंधों (सीबीआर), विशेष रूप से यूएस डॉलर और यूरो, की संख्या में कमी आई है। सीबीआर के समापन के कारणों के तहत उद्योग समेकन; लाभप्रदता का अभाव; समग्र जोखिम वहन क्षमता; तथा धन-शोधन निवारण और आतंकवाद के वित्तपोषण का मुकाबला (एएमएल/ सीएफटी) या उसे प्रतिबंधित करने की पद्धतियां शामिल हैं।

#### फिनटेक के निहितार्थ

11.37 एफएसबी ने जून 2017 में जी20 को प्रस्तुत रिपोर्ट में फिनटेक से होने वाले वित्तीय स्थिरता संबंधी निहितार्थों के संबंध में 10 ऐसे क्षेत्रों का उल्लेख किया है, जिन पर प्राधिकारियों द्वारा ध्यान दिया जाना जरूरी है और उनमें से तीन क्षेत्रों को वित्तीय स्थिरता की सुरक्षा के साथ ही अधिक समावेशी और सतत वित्त को बढ़ावा दिए जाने हेतु अंतरराष्ट्रीय सहयोग के लिहाज से प्राथमिकता पूर्ण दृष्टि से देखा जाता है, वे हैं (i) तृतीय पक्ष सेवा-प्रदाताओं से होने वाले परिचालन जोखिमों का प्रबंधन; (ii) साइबर जोखिमों को कम करना; तथा (iii) फिनटेक की गतिविधियों के बढ़ने के साथ ही पेश आने वाले समष्टि-वित्तीय जोखिमों की निगरानी करना।

#### समष्टि-विवेकपूर्ण नीतियां

11.38 पुनर्विनियमन के प्रति नए सिरे से ध्यान देकर समष्टि-विवेकपूर्ण नीतियों को परिष्कृत किया गया है (बॉक्स 11.2)। पहले दो बासेल ढांचे मोटे तौर पर व्यक्ति-विवेकपूर्ण स्वरूप के थे। बासेल-III के अंतर्गत एक व्यापक समष्टि-विवेकपूर्ण ढांचे

### बॉक्स 11.2: वैश्विक वित्तीय संकट पश्चात अवधि में समष्टि-विवेकपूर्ण नीतियों की भूमिका

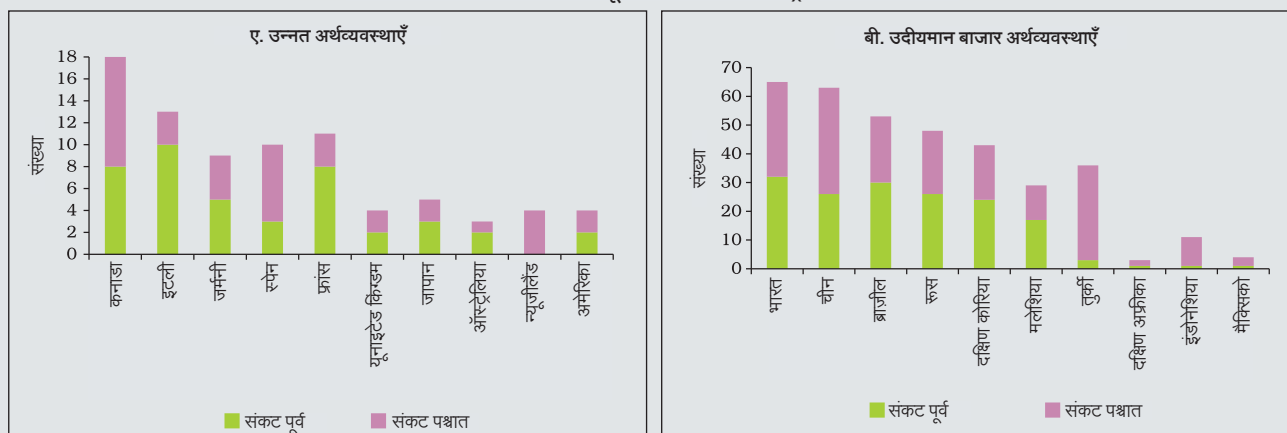
समष्टि-विवेकपूर्ण नीतियों के तीन इन्टरलॉकिंग मध्यवर्ती उद्देश्य हैं : (क) आघातों से निपटने के लिए वित्तीय प्रणाली की आघात-सहनीयता को बढ़ाना; (ख) कालांतर में बढ़ने वाली प्रणालीगत कमजोरियों का नियंत्रण; (ग) वित्तीय प्रणाली के अंतर्गत ढांचागत कमजोरियों को नियंत्रित करना। समग्रतः प्रणालीगत जोखिमों को रोकने के लिए समष्टि-विवेकपूर्ण नीति के तहत मुख्यतः विवेकपूर्ण साधनों का प्रयोग किया जाता है (आईएमएफ-एफएसबी-बीआईएस 2011)।

जीएफसी के बाद वाली अवधि में उन्नत और उदीयमान बाजार अर्थव्यवस्थाओं दोनों में नैतिक जोखिमों और प्रतिकूल चयन की 'एजेंसी समस्याओं' को कम करने हेतु समष्टि-विवेकपूर्ण नीतियों का प्रयोग किया गया है (चार्ट 1)। व्यापक आधार वाले पूंजी बफर जैसे कि गतिशील ऋण हानि प्रावधानीकरण अपेक्षा (डीपीआर) जैसे उपकरणों का उपयोग चक्र की अवधि में 'प्रत्याशित हानियों

को पूरा करने के लिए किया गया है, जबकि, प्रतिक्रिय पूंजी बफर (सीसीसीबी) का प्रमुख रूप से उपयोग बैंक द्वारा दिए जाने वाले उधार की प्रचक्रियता से निपटने तथा 'अप्रत्याशित हानियों' को पूरा करने हेतु किया गया है। इससे वित्तीय प्रणाली की आघात-सहनीयता में सुधार होता है और यह संकट के दौरान चलनिधि की अवरुद्ध स्थिति के प्रतिकूल प्रभावों का सामना करने हेतु वास्तविक अर्थव्यवस्था को सुरक्षा प्रदान करता है। लीवरेज अनुपात इन साधनों का एक अनुपूरक है, जो सामान्य विवेकपूर्ण मैट्रिक्स से अधिक लीवरेज ग्रहण करके बैंकिंग प्रणाली की आघात-सहनीयता को बढ़ाने की चेष्टा करता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि बैंक अपनी हानि का वहन करने की क्षमता से अधिक लीवरेज नहीं करते हैं।

(जारी....)

चार्ट 1 : समष्टि-विवेकपूर्ण उपायों का क्रॉस-कट्टी उपयोग



स्रोत: बीआईएस तिमाही समीक्षा, सितंबर 2017

क्षेत्रगत पूंजी अपेक्षाओं के कारण बैंकों को उधार देने की लागत को, विशेष रूप से संवेदनशील क्षेत्रों के मामले में, आंतरिकीकृत करना पड़ता है। वहीं, मूल्य की तुलना में ऋण (एलटीवी) की उच्चतम सीमाएं प्रतिकूल चयन और नैतिक जोखिम के तत्वों का समाधान करती हैं तथा ये बैंक के उधारों और आस्ति मूल्यों के बीच के फीडबैक लूप को तोड़ती हैं। आय की तुलना में कर्ज चुकौती (डीएसटीआई) अनुपात तथा आय की तुलना में कर्ज (डीटीआई) अनुपात आय और ब्याज दर संबंधी आघातों के प्रति हाउसहोल्ड्स की आघात-सहनीयता बढ़ाते हैं। लीकेजों को रोकने के लिए हाउसहोल्डों द्वारा लिए गए अप्रतिभूत उधारों पर जोखिम भारों को बढ़ाकर इनमें वृद्धि की जा सकती है।

जीडीपी की तुलना में क्रेडिट के अंतराल, अर्थात् दीर्घावधि प्रवृत्ति के मुकाबले जीडीपी की तुलना में क्रेडिट के अनुपात के धनात्मक विचलन, संबंधी सूचना का उपयोग समय-पूर्व चेतावनी के एक संकेत के रूप में किया जाता है। इसके अलावा, दीर्घावधि प्रवृत्ति की तुलना में आस्ति मूल्यों में धनात्मक विचलन आसन्न बैंकिंग विपत्ति का एक संकेत भी है। किराए और आय के स्तर की तुलना में सापेक्षिक रूप से संपत्ति मूल्यों में बढ़ोतरी होने से समुत्थानशीलता में वृद्धि होने की संभावना है। यह पाया गया है कि कर्ज चुकौती अनुपात अल्प अवधि के लिए एक बेहतर समय-पूर्व संकेतक के रूप में कार्य करता है। गौण क्षेत्रों से किए जाने वाले बड़े पैमाने का निधीयन बैंकों द्वारा उठाए जाने वाले जोखिम की मात्रा का संकेतक है।

यद्यपि समष्टि-विवेकपूर्ण नीति की प्रभावशीलता अभी साबित होना बाकी है, तथापि, कई अध्ययनों ने उसे अनुकूलतम होने की बात कही है। यह पाया गया है कि समुत्थानशीलता और ऋण की वृद्धि दर को पूंजी आधारित साधनों का समर्थन प्राप्त होता है, जबकि क्षेत्रगत पूंजी अपेक्षाएं बफर में बढ़ोतरी करती हैं (आईएमएफ, 2014)। एलटीवी, आय की तुलना में कर्ज (एलटीआई) और डीएसटीआई अनुपातों जैसे उपाय सिंगापुर (दरबार और अन्य, 2015) और हांगकांग (एचकेएमए, 2011) में क्रेडिट और आस्ति मूल्यों के बीच के फीडबैक लूप को तोड़ने में सफल रहे हैं।

कई वैश्विक बैंकों की हानि ग्रहण करने की क्षमता बढ़ी है, परिपक्वता रूपांतरण संबंधी जोखिमों को दूर किया गया है तथा चलनिधि जोखिमों को कम किया

गया है (येलन, 2017)। संभवतः समष्टि-विवेकपूर्ण नीतियों से उत्पाद लागत आएगी और इससे क्रेडिट आपूर्ति और निवेश प्रभावित होने से वृद्धि दर बाधित हो सकती है। ऐसा माना जाता है कि नीति निर्देश की वर्तमान व्यवस्था के बाहर नए जोखिम मौजूद हैं, जिनके कारण विश्व अर्थव्यवस्था अस्थिर हो सकती है। इससे बॉण्ड बाजारों में अप्रकट रूप से आहरण का दौर शुरू होने का जोखिम है (फ्रेन्शिया और अन्य, 2016)। समष्टि-विवेकपूर्ण नीतियां संकट की संभावनाओं को कम कर सकती हैं, जबकि वे उनका पूर्ण रूप से उन्मूलन करने नहीं सकतीं। वित्तीय स्थिरता के लिए अन्य नीतियों को भी उनके साथ ताल-मेल बिठाना आवश्यक है।

**संदर्भ:**

- दरबार, एस.एम और के.हाबेरमिअर (2015), 'एक्सपीरिंस विथ मैक्रोप्रूडेन्शियल पॉलिसी-फाइव केस स्टडीज़', डब्ल्यूपी/15/123, इंटरनेशनल मॉनेटरी फंड, जूना
- एचकेएमए (2011), 'लोन-टु-वैल्यू रेश्यो एज ए मैक्रोप्रूडेन्शियल अूल-हांगकांग एसएआर एक्सपीरिंस एंड क्रॉस-कट्टी एवीडेंस', बीआईएस पेपर्स नं. 57 बैंक फार इंटरनेशनल सेटलमेंट, अक्टूबर
- आईएमएफ (2014), 'स्टॉफ गाइडेंस नोट ऑन मैक्रोप्रूडेन्शियल पॉलिसी', दिसंबर
- आईएमएफ-एफएसबी-बीआईएस, (2011), 'मैक्रोप्रूडेन्शियल पॉलिसी टूल्स एंड फ्रेमवर्क : प्रोग्रेस रिपोर्ट टु जी20', अक्टूबर
- रामोस-फ्रन्शिया, एम एंड एस. गार्शिया-वेर्डू (2016), 'मैक्रोप्रूडेन्शियल पॉलिसी रेग्युलेशन : सम कान्टीन्यूइंग चैलेंजेज़', बीआईएस पॉलिसी पेपर्स नं. 86, सितंबर
- येलन. जे.एल. (2017), 'फाइनेशियल स्टेबिलिटी ए डिडेड आफ्टर ऑनसेट ऑफ दि क्राइसिस', ये टिप्पणियां अगस्त में कैनास सिटी फेडरल रिजर्व बैंक में आयोजित रिम्पोजियम में श्री जैकसन होल, व्योमिंग द्वारा 'फोस्टरिंग ए डायनेमिक्स ग्लोबल रिकवरी' विषय पर दिया गया।

की स्थापना की गई है तथा इसका विकास इन नीतियों के कार्यान्वयन की दिशा में विभिन्न देशों के अनुभवों और अर्जित ज्ञान पर विचार करके किया जाता रहा है।

### पिलर-3 प्रकटन अपेक्षाएं

11.39. बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बासेल समिति ने मार्च 2017 में तीसरे स्तम्भ के तहत प्रकटन के लिए नए मानक जारी किए हैं। यह मानक, तीसरे स्तम्भ के दायरे में वर्तमान बीसीबीएस प्रकटन संबंधी सभी अपेक्षाओं को समेकित करता है तथा वर्तमान दायरे में दो और मदों को शामिल करता है। इसके माध्यम से किसी बैंक का मुख्य विवेकपूर्ण मैट्रिक्स प्राप्त होता है जो तीसरे स्तम्भ के डेटा के उपयोगकर्ता को बैंक की विवेकपूर्ण स्थिति के विषय में समग्र रूप से परिचित कराएगा। बैंक के पीवीए की सूक्ष्म गणना की जानकारी प्रयोगकर्ता को देने के लिए जो बैंक विवेकपूर्ण मूल्यांकन समायोजन (पीवीए) को रिकॉर्ड करते हैं उन बैंकों के लिए नई प्रकटन अपेक्षाएं भी इसमें शामिल हैं। जनवरी 2016 में बीसीबीएस द्वारा निर्गत संशोधित बाजार जोखिम संरचना से उत्पन्न बाजार जोखिम हेतु संशोधित प्रकटन अपेक्षाएं स्तम्भ -3 मानक में हुए अन्य संशोधनों में शामिल हैं।

### प्रमुख ब्याज दर बेन्चमार्कों में सुधार

11.40. वर्ष 2014 के दौरान ब्याज दर बेन्चमार्क (आईआरबी) में जोड़-तोड़ करने के प्रयासों और प्रमुख अप्रतिभूत अंतर-बैंक बाजारों में चलनिधि की कमी की वजह से एफएसबी ने आईआरबी में वृद्धि और लगभग जोखिम मुक्त संदर्भ दरों (आरएफआर) के विकास के संवर्धन के उद्देश्य से संस्तुतियां की थीं। यूरो अंतर-बैंक प्रस्तावित दर (ईयूआरआईबीओआर), लंदन अंतर-बैंक प्रस्तावित दर (लाइबोर) और टोक्यो अंतर-बैंक (टाइबोर) प्रस्तावित दर की कार्य-पद्धति की जांच करने और उनकी मजबूती बढ़ाने के लिए कई उपाय किए गए जा रहे हैं। यूरोपीय मुद्रा बाजार संस्थान ईयूआरआईबीओआर के लिए एक हाइब्रिड मॉडल विकसित कर रहा है जो लेनदेनों और संबंधित बाजार आंकड़ों को मिलाकर विशेषज्ञता-पूर्ण

राय देगा। इसी प्रकार, लाइबोर और टाइबोर के प्रशासकों ने सारभूत आंकड़ों की कमी का पता लगाने के लिए इन बेन्चमार्कों की कार्य-पद्धतियों में समायोजन किया है। नए और विद्यमान आरएफआर को चिह्नित करने का कार्य भी जारी है, जिनका उपयोग, विशेषकर व्युत्पन्नियों के मामले में, संविदाओं आदि में आईआरबी के स्थान पर किया जा सकता है। हालांकि, आरएफआर उपलब्ध होने पर भी आईआरबी से आरएफआर में अंतरित होने की दिशा में सीमित प्रगति हुई है।

### VI. उपसंहार

11.41 वैश्विक वित्तीय संकट के बाद से उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में बैंकों के स्वास्थ्य में काफी प्रगति हुई है। इसके विपरीत, कुछ उदीयमान बाजार-अर्थव्यवस्थाओं में देश विशिष्ट तत्वों के कारण अनर्जक ऋणों में तीव्र वृद्धि हुई है। बैंकों की पूंजीगत स्थिति सुधरी है और वित्तीय सहायता पर अब नियंत्रण है। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में बैंक तुलन-पत्रों में सुधार के साथ ऋण वृद्धि जोर पकड़ रही है, जबकि उदीयमान बाजार अर्थव्यवस्थाओं में मांग व आपूर्ति घटकों के कारण ऋण वृद्धि में मंदी बनी हुई है। वैश्विक वृद्धि में फिर से मजबूती और विस्तार (स्प्रेड) आने पर भी बैंक-लाभप्रदता कम है। कुछ मामलों में बैंकों के लिए यह पूंजी लागत से भी कम है, जिससे अधिक मजबूती से ऋण विस्तार करने और नैसर्गिक रूप से पूंजी आधार बढ़ाने के लिए बैंकों की क्षमता में बाधा हो रही है। कुछ मामलों में 'फिनटेक' के उद्भव से बैंकों की लाभप्रदता पर खतरा बना हुआ है। इससे जोखिम है लेकिन कार्यकुशलता लाभ द्वारा लागत कम करने और अन्य लाभप्रदता को प्रोत्साहित करने का रास्ता खुल गया है। सुधारों के कारण वैश्विक बैंकिंग प्रणाली अधिक सुरक्षित और आघात-सहनीय हुई है, समष्टि-विवेकपूर्ण नीतियों ने कमजोरियों को दूर किया है और पारंपरिक नीतियों को समर्थन मिला है किंतु जोखिम अभी भी बने हुए हैं। विशेषकर, क्रिप्टो-मुद्राओं की बढ़ती स्वीकार्यता परंपरागत बैंकिंग प्रणाली के लिए बड़ा जोखिम बन रही है।